ई–पुस्तिका

परिवर्तन

जीवन का सार

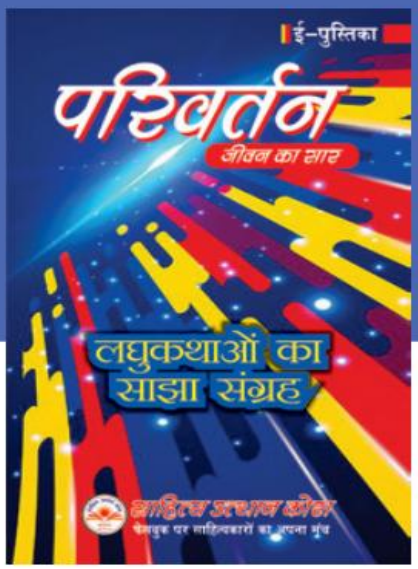
लघुकथाओं का साझा संग्रह



साहित्य उत्थान कोश
फेसबुक पर साहित्यकारों का अपना मंच

साहित्य उत्थान कोश के मंच से परिवर्तन विषय पर लघुकथा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। फलस्वरूप इस प्रायोजन में बहुत अच्छी-अच्छी कहानियां हमें प्राप्त हुई हैं, कोई एकांकी के रूप में है तो कुछ समाज में फैले कुरीतियों पर प्रहार करती दिख रही है। किसी कहानी में में महिला सशक्तिकरण की बात दिखती है तो किसी कहानी में आत्मनिर्भरता पर जोर दिया गया है। मेरे हिसाब से तो समाज के हरेक पहलू पर लेखकों ने कहानियां लिखने का प्रयास किया है। यह बहुत ही सराहनीय है। मुझे तो यह कहते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है कि कम से कम हम लिखने के लिए प्रेरित तो कर रहे हैं। कहानी लिखना कोई आसान नहीं है। फिर भी प्रतियोगिता के माध्यम से हमें 40 लघु कथाओ को इस ई-पुस्तिका में संकलित करने का अवसर प्राप्त हुआ है। इस पुस्तक में कुछ बड़ी भी कहानी हैं हालांकि हमने इन कहानियों को भी प्रकाशित किया। ये कहानियां भी अपने-आप में बहुत अच्छी हैं।

इस पुस्तक में प्रकाशित कहानियों की मौलिकता और स्वामित्व स्वयं लेखकों की है। इस पुस्तक में प्रकाशित कहानी के विचार और मूल बात लेखकों की अपनी है और लेखकों ने इस बात की पुष्टि भी किया है। साहित्य उत्थान कोश किसी भी कहानी के मौलिकता का जिम्मेदारी नहीं लेता है इसकी जिम्मेदारी स्वयं लेखकों की है।



अनुक्रम

नवनीता कटकवार	2	अर्चना जोशी	24
डा.शुभ्रा वार्ष्णेय	3	पूनम कपरवान	25
नफे सिंह योगी मालड़ा	4	चँद्रमुखी सहरावत	26
भानु (भुनेश्वरी वर्मा)	5	कमल शर्मा "राही"	27
दीपक क्रांति	6	के सी टण्डन	28
सविता परमार	7	अंशु प्रिया अग्रवाल	30
कांति प्रसाद सैनी	8	राजपूत देवेन्द्र ठाकुर	31
गोविंद तिवारी "विन्स"	9	अभिज्ञान शाकुन्तलम्	32
दमयंती मिश्रा	11	सोनल ओमर	33
वेद प्रकाश प्रजापति	12	रागिनी तिवारी ' स्नेह '	34
दिलीप भाटिया	13	राखी बिष्ट	35
भरत कोराणा	14	प्रवीण राणा वर्मा	36
गौरव सिंह घाणेराव	15	दीपक कुमार पंकज	37
पायल जैन	16	श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'	38
अंजना अग्रवाल	17	पी.के. सैनी	40
यशवंत राय श्रेष्ठ	18	ललित भट्ट	42
रश्मि पाण्डेय	20	प्रकाश कुमार खोवाल	44
आशुतोष तिवारी	21	कैलाश गर्ग रातड़ी	45
प्रभु राम गरासिया	22	जीवन किन्डो	46
भावना गौड़	23	कुमार संदीप	47



नवनीता कटकवार

बालाघाट

हुनर

माधुरी जी का गाना खत्म होते ही सारा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा, 60 साल की माधुरी जी के आंखों में आज भविष्य की प्रति आशा और चमक साफ-साफ नजर आ रही थी। जूही को गले लगा कर वह बार -बार उसका दिल से शुक्रिया अदा कर रही थी।

6 बहनो में सबसे छोटी जूही अपने पिताजी के साथ ही रहती थी।

माँ को गये 5 साल हो गए थे, सब दीदीया अपने अपने घरों में व्यस्त थी, ऐसे में पापा की देखभाल उस पर आ पड़ी थी, जूही हमेशा से बड़ी मेधावी छात्रा थी, प्रतियोगिता परीक्षा अच्छे नंबर से पास करके वो महिला बाल विकास अधिकारी के पद पर कार्यरत थी, इसके बावजूद वह अक्सर बेचैन ही रहती।

कुछ अलग करने की चाह ही तो थी जिस कारण जूही अपनी छुट्टियों का सारा समय वृद्धाश्रम में जाकर योगदान देती। माधुरी जी से उसकी पहली मुलाकात 'आधार' वृद्धाश्रम में उस दौरान हुई थी जब परिवारजनों और बच्चों से ठुकराई जीवन की संध्या में बुरी तरह से निराशा ग्रस्त थी, जीने की उमंग उनमें ना के बराबर बाकी थी। उनके अंदर कोई आशा बाकी नहीं थी कि उनके बच्चे उन्हें वापस लेने आएंगे। ऐसे में जूही का स्नेह भरा व्यवहार माधुरी जी लिए वरदान की तरह रहा। एक दिन बातों -बातों में उन्होंने जूही को बताया था कि उनकी संगीत में गहरी रुचि है और उन्होंने संगीत भी सीखा है।

आज जूही के प्रयासों का ही नतीजा था कि माधुरी जी अपने अंदर छुपे हुनर को पहचान पाई थीं। अब वह संगीत के सात सुरों में अपनी बाकी जिंदगी की खुशियां तलाश कर उसमें मग्न हो चुकी थीं। जूही भी आज माधुरी जी को खुश देखकर आत्मिक खुशी का अनुभव कर रही थी।

किसी को फिर से जिंदगी का मकसद देने का हुनर आज उसे भी हासिल हो गया था और वह फिर से दोगुने उत्साह से चल पड़ी।

माधुरीजी जैसी और कई निराश जिंदगियों के जीवन में, परिवर्तन लाने ..फिर से आशाओं और उमंगों के नये रंग भरने के लिये।

●

डा.शुभ्रा वार्ष्णेय
मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश



मन का संक्रमण

दादी हलवा" नन्हे आरव को अपनी तरफ आते देख कर शांति देवी चिल्ला पड़ी, "ऊपर जाओ नीचे क्यों आ रहे हो?"

आज कह दूंगी घर खाली करने के लिए"

सुन पति शंभू दयाल ने कहा," इतनी चिंता मत करो सुरक्षा के नियमों का पालन कर डॉक्टर साहब ड्यूटी कर रहे हैं ऐसे में संक्रमण का डर नहीं है"

ऊपर का हिस्सा एक चिकित्सक परिवार पर किराए पर होने से आज शांति देवी को संक्रमण का डर था।

तभी उनकी बैंक कर्मी पुत्री सोनाक्षी का फोन आ गया, "मम्मी मैं बहुत परेशान हूं, नोटों से संक्रमण ना हो जाए यह सोचकर मकान मालिक घर खाली करने को कह रहे हैं"

" स्वार्थी लोग... कैसा मन है इन लोगों का" कहते हुए शांति देवी के शब्द उनके गले में अटक गए । वह भी तो मन के संक्रमण से ही ग्रसित हैं। ऐसे समय में अचानक घर ढूंढने में इन लोगों को कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा, इस बात का विचार किए बिना वह स्वयं के बारे में ही सोच रही थीं। बेटी के आए फोन ने उनकी सोच में परिवर्तन कर दिया था।

अब वह रसोई में थीं थे, नन्हे आरव को हलवा देने के लिए।



नफे सिंह योगी मालड़ा

महेंद्रगढ़, हरियाणा

माँ से मिलना है

आज सुबह-सुबह दोस्त के यहाँ चंडीगढ़ गृह प्रवेश हवन पूजा के लिए जाते समय अचानक रास्ते में कार का टायर पंचर होने पर ड्राइवर ने कहा सर ! टायर बदलने में थोड़ा समय लगेगा। मैंने खिड़की खोली और बाहर निकला तो देखा कि...एक बूढ़ी अम्माँ गेट पर खड़ी-खड़ी अपने थूक से पल्लू को गिला करके चश्मा पौंछ- पौंछकर मुझे बार-बार ऐसे निहार रही थी जैसे कोई उम्र कैद की सजा पाया हुआ कैदी किसी के आने का इंतजार कर रहा हो और फिर एक हाथ से इशारा करके मुझे बुलाने लगी।

मैंने ड्राइवर से कहा कि....तुम टायर बदलो तब तक मैं आता हूँ । जब मैं थोड़ा नजदीक पहुँचा तो बूढ़ी अम्मा ने वापिस जाने का इशारा कर दिया। मैं समझ नहीं पाया ...मेरे पैर जाने को कह रहे थे पर मन बूढ़ी अम्माँ के वापस लौटने के इशारे पर काम कर रहा था। मैंने पैरों की भाषा को पहचाना और बूढ़ी अम्माँ के पास जाकर पूछा कि... अम्मा ! क्या हुआ ???? पहले तो आप बुला रही थी और अब बिना मिले ही वापिस भेज रही हो। बूढ़ी अम्माँ ने भारी स्वर में कहा कि ...बेटा ! मैंने सोचा कि ...शायद मेरा दीपू आया है, तुम नजदीक आये तो पता चला कि ...दीपू नहीं है। इसलिए वापस जाने को कहा। इतना बोलते ही आँसूओं ने पलकों का बाँध तोड़ दिया और गालों पर बनी झुर्रियों के जरीए आंचल की ओर निर्झर झरने की भांति झरने लगे।

तब तक ड्राइवर भी टायर बदली कर चुका था । जल्दी आओ साहिब ! लेट हो जाएँगे ड्राइवर ने पुराने कपड़े से हाथ पोंछते हुए कहा। मैं मुड़ा तो देखा ....गेट के ऊपर लिखा था " वेदना वृद्धाश्रम " बूढ़ी अम्माँ की बात तेरे कानों में निरंतर गूँज रही थी।

मेरा मन परिवर्तन हो गया, मैं गाड़ी में बैठा और ड्राइवर से कहा कि ...गाड़ी वापस घर ले चलो। ड्राइवर ने अचंभित स्वर में पूछा ...क्या हुआ सर ???? मैंने रुमाल से आँखें पोंछते हुए कहा कि... माँ से मिलना है जो....पिछवाड़े के कमरे में अकेली रहती है।

●

भानु (भुनेश्वरी वर्मा)

रायपुर, छत्तीसगढ़



परिवर्तन

पड़ोस के एक गांव में रामलाल खेती कर अपने परिवार का भरण पोषण करता था। इस कार्य में उसकी पत्नी और बेटा (नीरज) मदद करते। नीरज बचपन से ही मेधावी छात्र था। इंजीनियर बनना उसका सपना था पर उसके पिता गरीब थे। बड़ी मुश्किल से उन्होंने नीरज को हायर सेकंडरी तक की पढ़ाई कराई। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए वे सक्षम नहीं थे मगर अपने बेटे के सपने खातिर आगे की पढ़ाई कराने की ठानी। इसके लिए रामलाल को अपनी खेत गिरवी रखनी पड़ी। नीरज ने इंजीनियरिंग की परीक्षा मेरिट लिस्ट में पास की। प्रतियोगिता की दौड़ में नौकरी मिलना बेहद मुश्किल था, शिक्षित बेरोजगारों की जो लंबी फौज है हमारे देश में। ऊपर से भ्रष्टाचार का जमाना। नौकरी के लिए एड़ी चोटी की जोर लगा दी पर नहीं मिली। थक हार नीरज अब खेत जाने लगा परिवार की स्थिति बेहद दयनीय, नौकरी के सपने छोड़ अपनी सोच में परिवर्तन कर किराये के खेतों में अपने सपनों के बीज बोये। उसके दोस्त और रिश्तेदार कभी-कभी ताने भी देते पर कठिन परिश्रम रंग लाई, उन्नत तकनीकों का प्रयोग कर खेती की की और अच्छी फसल उपजाई। अपने गिरवी रखे खेत छुड़ाई और देखते ही देखते कुछ वर्षों में नीरज की सफल और उन्नतिशील किसानों में गिनती होने लगी।

अपनी मेहनत से खेतों का दायरा बढ़ाया और अपनी आमदनी भी। पढ़ी-लिखी सुंदर सुशील कन्या से विवाह कर अपने माता पिता के साथ सुखमय जीवन बिताने लगा।

नीरज अपनी सोच में परिवर्तन नहीं करता तो आज किसी बड़ी कंपनी में थोड़े से पगार में नौकरी करता रहता। आज उसके पास मजदूर काम करते हैं वो कई फार्महाऊस का मालिक है।



दीपक क्रांति

लातेहार, झारखण्ड

मोबाइल नंबर -7004369186

deepakkranti225@gmail.com

सत्य के प्रतिमान

'सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा, शांतिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः ।'

महाशय जहाँ भी जाते, इस श्लोक को बोलकर मंच और दिल दोनों जीत लेते। सभाओं में, गोष्ठियों में या सेमिनारों में गांधीवादी सत्य के प्रतिमानों पर अपनी वाचालता द्वारा सफल सम्भाषण दिया करते। कोतवाली से लेकर तहसील तक उनकी इज्जत थी, यूँ कहें कि उनकी धाक थी!

सेठजी खाते-पीते घर के थे। लोगों को कर्ज देने का पुनीत कार्य भी भी किया करते थे। एक दिन आगामी गोष्ठी-आयोजन संबंधी चर्चा के लिये मैं उनके यहाँ गया हुआ था। मैंने देखा एक गरीब जैसा दिखनेवाला आदमी उनके सामने बेबस-सा बहस करते हुए गिड़गिड़ा रहा था -सेठजी, मैंने दस हजार ही लिये थे आपसे।

सेठजी -अरे धूर्त, मेरे जैसा सत्यवादी आदमी तुझे मूर्ख नजर आता है क्या? तूने पूरे पंद्रह हजार लिये थे, जो सूद समेत बीस हजार हो गए हैं।

आदमी -मैं गरीब हूँ, मालिक! कम से कम सूद तो क्षमा कर दें, मालिक! मैं तो मूल भी अभी दे पाने में सक्षम नहीं हूँ। दया करें मालिक, आपको आपके पूज्य पिताजी का वास्ता!

सेठजी (चिल्लाते हुए)-मेरे पिताजी होते तो सीधे पच्चास हजार लेते या तेरी जमीन रख लेते, बेवकूफ! मैं तो बस अपना धर्म निभा के तुझसे वाजिब पैसे मांग रहा हूँ।

आदमी-क्षमा मालिक, क्षमा! मैं अभी कुछ भी देने की स्थिति में नहीं हूँ। बेटा भी लॉकडाउन में परदेस में फंसा हुआ है। आप स्वयं ज्ञानी पुरुष, दयानिधान हैं मालिक! पैर पकड़ गिड़गिड़ता रहता है।

सेठजी-ओ शांति! अजय-विजय को भेजो, बहुत मुँह चलने लगा इस इस नीच का।

अब उनके पुत्रों द्वारा मैं उस गरीब लाचार को बेदर्दी से पिटते हुए देख रहा था, वो भी 'सोशल डिस्टैन्सिंग' का पालन करते हुए! लोकवाले सत्य के सभी प्रतिमान वचन और कर्म में यह परिवर्तन देख कर ठगे-से महसूस कर रहे थे !

सविता परमार

शाजापुर



परिवर्तन

रात के लगभग 12 बजे थे, आज डिलवरी केस थे, तो उन्हें निपटाते हुए देर हो गयी। उन पेशेंट को अटेंड करके मुझे बहुत अच्छा नही लगा, आज भी उनकी सोच वही अटकी हुई थी, दोनों को बेटिया हुई थी। इसलिये उन दोनों औरतों को बहुत कोसा जा रहा था। उन औरतों का कराहना सुनने के बजाय, उनके सर पर हाथ फेरने के बजाय चार औरतों की मंडली बैठकर तरह-तरह की बातें कर रही थी। वही बातें रह-रहकर मेरे जेहन में आ रही थी। मुझे कहीं न कहीं उनकी बाते सार्थक लग रही थी कि लड़कियां क्या कर लेगी ,आये मौका तो भाइयो को लड़वा दे ये छोरिया।

मेरे रोज हॉस्पिटल से घर लौटते समय बाजारों से लडकिया नदारत रहती हैं, क्यो? रात को हॉस्पिटल में जितने भी केस आते हैं, अधिकांशतः कोई पुरुष ही साथ होता है, क्यो? क्या हम लड़कियों को फ्रीडम देना नही चाहते या डरते हैं अपने ही संस्कारो से? क्यों रात को लेट हो जाने पर चिंता करने लगते हैं? क्यों कहते हैं कि रात मे अकेली लड़की कहाँ जायेगी? क्योकि हमें भी डर है की फिर कहि कोई निर्भया न बन जाये। यदि हम समाज की इस विकृति को दूर नही कर सकते तो क्यो दुहाई देते हैं कि आज के दौर में स्त्री और पुरुष कंधे से कंधा मिलाकर काम करते हैं?

खैर जाने दें, बात को लेकिन उस दिन मैंने प्रण लिया कि मैं अपनी बेटियों को उसी फील्ड में भेजूंगी जहाँ उन्हें कभी भी इस लड़कियों की मानसिकता से पीछे जाने की भावना का शिकार न होना पड़े। आज मेरी दोनों बेटिया आई.पी.एस. हैं। जहाँ हर क्षण उन्हें पुरुषों के साथ खड़ा रहना होता है। मेरी छोटी से जिद ने मेरी बेटियों को इस मुकाम तक पहुंचा दिया।

तभी से मैं अपने संपर्क में आने वाले सभी लोगों को 'सेव गर्ल चाइल्ड' के लिये प्रेरित शुरू किया और सदा करती रहूंगी। एक दिन निश्चित ही समाज में यह परिवर्तन आयेगा कि हर परिवार बेटियों के लिये दुआ मांगेगा।



कांति प्रसाद सैनी

जनूथर डीग, भरतपुर

परिवर्तन

पवन - 'नहीं पापा, नहीं! यह मेरे जीवन का सवाल है।'

मोती- 'पर बेटा यह हमारी नाक और पुरखों की इज्जत का सवाल है।'

पवन- 'पापा! मृत्यु भोज अभिशाप है..... यह एक सामाजिक बुराई है.....इसे हमें छोड़ना चाहिए। कब तक हम इन रूढ़ीवादी परंपराओं को ढोते रहेंगे।'

मोती के पिता जी का स्वर्गवास हुए आज सात दिन हो गए थे। अब मृत्यु भोज पर चर्चाएं होने लगी थी। मोती और गांव वालों का मत था कि पड़ोसी गांव के सुरेश ने अपने पिताजी के मृत्युभोज में सात गांव के लोगों को निमंत्रण दिया था। खूब भीड़ हुई थी। लोग सुरेश की सराहना कर रहे थे। अगर हमने इससे कम लोगों को भोजन कराया तो हमारी और पुरखों की क्या इज्जत रह जाएगी?

इधर पवन का सेकेंडरी का रिजल्ट आया था। उसने सेकेंडरी में गांव के विद्यालय से 84 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। अब वह वैज्ञानिक बनकर देश की सेवा करना चाहता था। गांव के विद्यालय में साइंस विषय नहीं था। वह जयपुर के प्रतिष्ठित विद्यालय में प्रवेश लेना चाहता था। किंतु पापा आर्थिक अभाव के कारण गांव में रहकर ही विद्यालय में पढ़ने के लिए कह रहे थे।

मोती का परिवार गांव का एक सामान्य कृषक परिवार था, जो खेती-बाड़ी कर अपने परिवार का पालन करता था। आज उसके सामने विषम परिस्थिति थी, एक तरफ बेटा था तो दूसरी तरफ पिताजी। अंत में विजय पिताजी की हुई।

समय अपनी गति से चलता रहा। आज गांव में समाज सुधारकों का एक दल आया है। इसलिए गांव के मंदिर पर सभी लोग (स्त्री-पुरुष) एकत्रित हैं। उस भीड़ में पवन भी है। मृत्यु भोज पर तर्क-वितर्क हो रहे हैं। अंत में सभी इस बात पर सहमत हुए कि वास्तव में मृत्युभोज एक सामाजिक बुराई, अंधविश्वास व रूढ़िवादी परंपरा है। इस पर हमें प्रतिबंध लगाना चाहिए।

गांव में मृत्यु भोज पर प्रतिबंध लगा दिया गया। पवन खड़ा-खड़ा सोच रहा था "काश! यह परिवर्तन इस गांव में 10 वर्ष पहले आ जाता तो मेरा जीवन, मेरा भविष्य बर्बाद नहीं होता।"

गोविंद तिवारी "विन्स"

रायबरेली (उत्तर प्रदेश)



परिवर्तन

सुबह उठते ही आवाज आयी भईया जल्दी चलो! अगर आज भी काम नही मिला तो शाम पापा की दवा कैसे ली जायेगी। आज शुक्रवार हैं डाक्टर साहब आज ही आयेंगे लखनऊ से। इतना कहते हुए राजू रोटी की पोटली हाथ ले पैदल ही चैराहे की तरफ चल दिया। पीछे-पीछे राम औतार भी भाई के साथ हो लिया। चैराहे पर जा कर दोनों एक पेड़ के नीचे बैठ कर किसी के आने का इन्तजार कर रहे थे ताकि आज कोई उन्हें काम दे दे, तभी एक लम्बी सी कार आ कर रुकी? दोनों की आखों में उम्मीद की एक आस जगी। इतनी देर मे एक आदमी उस कार से उतर कर पास आ कर बोला काम करोगे, तभी राम औतार बोला हा साहब करूंगा पर क्या करना होगा? तपाक से उस आदमी ने बोला कुछ नही बस घर बन रहा है, ईटों को छत पर ले जाना होगा क्या कर पाओगे? उस आदमी ने सन्देह की नजरों से राजू की तरफ देखा। इतने में राजू बोला क्यू नहीं साहब हम आये ही मंडी मे बिकने, जो काम मिलेगा सब करूंगा साहब। दोनों भाई उस आदमी के साथ चल दिये पर अंदर ही अंदर दोनों बहुत ड़र रहे थे क्यूंकि आज से पहले कभी मंडी मे बिकने नहीं आये थे। आज अपनी माता जी की तबियत और पापा के पागल हो जाने के कारण आना पड़ा। पर दोनो भाई एक आशा के साथ उस आदमी के साथ-साथ जा रहे थे, मन में आशा थी कि आज मै शाम को पैसा पाऊंगा फिर पापा की दवा कराने जाना होगा। उस आदमी ने कहा दोनों काम में लग जाओ और हाँ अगर बैठ कर आराम किया तो शाम को पैसा काट लुंगा।

राम औतार को अपना गमछा देते हुए राजू बोला भाई इसे सर पर बान्ध लो धूप बहुत हैं इतना कह कर राजू अपने काम मे लग गया। दोपहर के एक बज रहे होंगे दोनों को भूख भी लगी पर मन में डर था कि कहीं खाना खाने बैठ गये तो वो आदमी पैसा ना काट ले। यह सोच दोनों काम करते रहे। तभी किसी ने पीछे से आवाज लगाई वो आवाज किसी औरत की थी, दोनों काम करते-करते ही सर को पीछे घुमा कर देखा तो पीछे एक नब्बे के आस-पास की माता जी खडी थीं, वो बोली हमे क्या देख रहे हो जाओ खाना वाना खा लो बेटा। इतना सुनते ही राम औतार के कदम ऐसे उस पेड़ की तरफ चल पडे जिस पर रोटी की पोटली टंगी थी जैसे दुनिया की बहुत बडी खुशी मिल गयी हो।

शाम होते ही दोनों को चालीस-चालीस रुपये देते हुए आदमी बोला कल आओगे क्या? राजू के मुख अनायास ही निकल पड़ा क्यूं नही साहब आऊँगा जरुर आऊँगा। इतना कहते उसकी आंखों से आंसू छलक पड़े। उस आदमी की माता जी देख रही थी और तभी अपने बेटे को बुला कर बोली बेटा

लगता है इन बच्चो को कोई बडी दिक्कत है वर्ना पढ़ाई करने के इस उम्र में मंडी मे बिक कर परिवार चला रहे हैं। तभी आदमी उन दोनों के पास आ कर बोला पढ़ाई वढाई नही किये का? तभी राजू बोला साहब किये हैं ना दसवीं तक राम औतार ने और दसवी फेल मै भी हूँ। राम औतार तभी बोला साहब का बताई भईया बोले अब मत पढ़ो चलो कोई काम किया जाए, पापा पागल हो गये थे ना इस लिये। अम्मा की भी तबियत सही नहीं है उन्हहू के परसों से बुखार आ रहा है। आज पहली बार हम दोनों मंडी मे बिकने आये हैं साहब। हम पण्डित हैं पर समाज ये नही देखेगा की हम भूखे है बस बोलेगा देखो पंडीत्वा का मंडी मा बिकय जात हैं पर साहब क्या करूँ और कोई काम भी तो नहीं है। तभी उस आदमी की माता जी बोली बेटा घर का काम तो कर लोगे ना? राम औतार को तो मानो उसकी बात सुन कर साँप सूंघ गया हो, तभी राजू बोला हा माता जी कर सकता हूँ। माता जी ने कहा तो ठीक हैं कल से तुम मेरे घर का सब काम करोगे। पर काम क्या करना होगा राम औतार ने भाई की तरफ घूरते हुए उस आदमी से पूछा? अरे सब काम जैसे बर्तन धोना, कपड़े धोना और जो-जो बोला जाये सब करना पड़ेगा पर माह मे छुट्टी नही मिलेगी वह आदमी बडे प्रेम से बोला। राजू ने सहमती मे सिर को हिला के भाई के साथ वापस घर की तरफ चल पड़ा। रस्ते भर राम औतार मन ही मन कुछ बड़बड़ाते हुए चल रहा था।

दूसरे दिन राजू बोला भाई चलो आज नही चलना क्या? साहब बोले थे कल भी आना हैं तुम्ही जाओ हमको नही जाना कही भी मै तुम्हारी तरह नही हूँ पण्डित होकर जूठे बर्तन धोने जा रहे हो राम औतार गुस्से में राजू की तरफ देखकर बोला। इतना कह कर राम औतार रोटी की पोटली ले कर चल पड़ा मंडी मे बिकने लेकिन राजू रुंधे हुये गले से बस इतना ही बोला भाई हाथ तो रत्न हैं काम कोई भी हो करना चाहिए। राजू भी अपने काम पर पहुंच गया, अब दोनों भाई रोज यही करते राम औतार मंडी जाता और राजु अपने काम पर। कुछ दिन ही बीते की राम औतार को एक होटल में गार्ड की नौकरी मिल गयी अब तो राम औतार मन ही मन बहुत खुश रहता उसे अपने भाई को बुरा भला कहने मे कोई भी संकोच ना होता और कहता फिरता की पण्डित हो कर समाज मे बेज्जती करा रहे हो। परन्तू राजू अपने काम में खुश था। अचानक एक दिन उस माताजी ने राजू से बोला बेटा जब काम खतम हो जाता है तो बबुआ की किताब पढ़ लिया करो वो भी तो दसवी मे ही हैं इतना सुन राजू अनायास ही पुछ बैठा क्या मैं दुबारा पढ़ाई चालू कर सकता हूँ। राजू को बोलते समय डर नही लगा क्युकि पूरे घर मे माता जी की सेवा करते-करते इतना चहेता जो हो गया था तभी माता जी बोली का बचुआ काहे नही। फिर क्या था राजू को मानो खुशियों का भंडार मिल गया हो पर अपने चहरे पर खुशी के एक भी लकीर ना आने दिया। अब वह रोज अधिक से अधिक समय वहीं रहता और पढ़ाई चालू कर दिया। राजू रोज जल्दी-जल्दी काम समाप्त कर के पढ़ाई करने बैठ जाता। समय बीतता गया राम औतार अपने गार्ड की नौकरी मे खुश था इधर राजू पढाई कर कर के बारहवीं की परीक्षा उत्तीर्ण कर लिया और एक कम्पनी मे मैनेजर की नौकरी करने लगा परंतु जब भी राजू को समय मिलता वह उस माता जी से मिलने उनकी सेवा करने पहुंच जाता अब तो माता जी बिस्तर से भी नही उठ पाती थी बिस्तर पर ही बस लेटी रहती और राजू से कहा करती बेटा समय के साथ-साथ जो खुद को परिवर्तित करता है वही इस संसार मे सबसे खुश रह सकता है। ●

दमयंती मिश्रा

गैरोट, मध्य प्रदेश



माँ

माँ मात्र शब्द नही है। इसमे इतनी गहराई है की थाह पाना मुश्किल बहुत ही कठिन है।

माँ कभी अपनी संतति को दुखी नही देख सकती। अपनी जान दे सकती है पर तकलीफ नहीं।

पर आज इस परिवर्तित समय मे बहुत कुछ ऐसा घटित हो रहा है की सांसे थम जाती हैं। जिसके लिए जीवन भर दुख उठाती उसी माँ मारने मे भी कतई संकोच नही करते। अमीर हो या गरीब, धन व बुरी आदतों मे लिप्त मानव सब भूल जाता है। महेश के पिता अचनाक चल बसे। तब वह १५साल का था। माँ दूसरों के घर में चैका बरतन कर उसे लायक बनाया। अच्छे पद पर प्रतिष्ठित हो गया। शादी कर वह बीबी को ले चला गया। बीबी थी पढी-लिखी थी पर अहम बहुत था। एक दिन महेश अपने माँ को अपने घर ले आया। बडे अमीर बाप की बेटी को महेश की बीबी रेखा उससे सब काम करवाती साथ ही अपनी सखियों के सामने उसकी बेइज्जती करती। उसने मान मर्यादा की सब हदें पार कर दी। हार कर माँ गाँव चली गई। महेश एक दिन अपने नौकर को देर से आने पर फटकार लगाने लगा, नौकर बोला बाबू माँ बिमार है उसकी सेवा में देर हो गई। महेश जोर से चिलाकर बोला मरी तो नहीं! नौकर बोला बाबू वह तो ईश्वर से भी महान है। मै आप सा नही बन सकता कि बीबी से या आपसे दबकर माँ को छोड दूँ। यह सुनते ही महेश का मन में परिवर्तन हुआ, उसकी आंखों पर बंधी पट्टी खुल गई। महेश के मन में माँ प्रति प्यार उमड़ा वह उसी दिन गाँव गया। पर माँ बिमार थी फिर भी बोली बेटा जाओ अपनी गृहस्थी संभालो। घर बिगड़ने मत दो। यह जीवन दो पहियों की गाड़ी पर ही सुरक्षित है। यह मेरा गहरा अनुभव है। मेरी चिंता न करो ये लच्छू मेरी देगभाल कर देता है। यह होती माँ की ममता। इसीलिए इसे ईश्वर कहते हैं।



वेद प्रकाश प्रजापति

बी.ई. (आई आई टी रूडकी)
डी. बी. एम. (आई सी एफ ए आई)
उप महाप्रबंधक (ए आई ई एस एल)

परिवर्तन

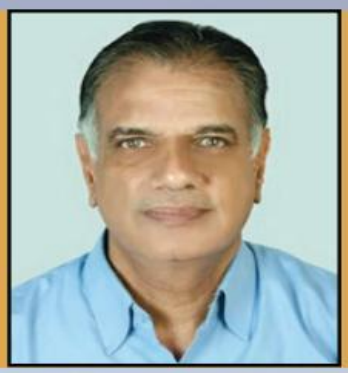
गंगा नदी में हर साल बाढ़ आता है और उसके किनारे का खेत बाढ़ में डूब जाता है । जब बाढ़ नहीं होता है, तब गंगा के किनारे का बहुत बड़ा क्षेत्रफल खेती योग्य होता है और भूमि भी बहुत उपजाऊ है, लेकिन वही फसल उगाई जा सकती है जिसमे सिंचाई की जरूरत न हो, जैसे परवल, करैला, तरबूज इत्यादि।

गाँव का एक होनहार नौजवान कृषिविज्ञान मे अध्ययन के बाद जब नौकरी नहीं मिली तो इस तरफ उसका ध्यान गया कि इसमे सिंचाई कि सुविधा कैसे उपलब्ध कराई जाय। ट्यूबेल संभव नहीं था क्योकि बाढ़ में डूब जायेगा। उसने सोचा क्यो न गंगा के पानी का इस्तेमाल सिंचाई के लिए करें। गंगा के किनारे जमीन उबड़-खाबड़ होती है, तो पानी ले जाने के लिए नाली भी नहीं बन सकता। उसने डीजेल वॉटर पम्प और खूब सारी प्लास्टिक की मुलायम पाइप ले आया जिसे कही भी घूमा सके। फिर तो एक क्रांति सी आ गयी, गंगा के पानी को सिंचाई में प्रयोग करने से गंगा के किनारे फसलें लहलहाने लगी। इसमे किसानो को बहुत फ़ायदा हुआ तथा साथ में उसकी भी अच्छी कमाई हुई। यह एक अभूतपूर्व प्रयोग था जो गंगा के किनारे की उपजाऊ भूमि को हरित भूमि में परिवर्तित कर दिया।

गाँव में रहकर अपनी योग्यता का भरपूर इस्तेमाल करता है और नए नए उद्यम की शुरुवात करता रहता है। आज नौकरी नहीं पर खुद का अच्छा व्यवसाय और कॉलेज है ।

दिलीप भाटिया

238, बालाजी नगर, रावतभाटा,
राजस्थान -323307
मोबाइल: 0 94615 91498



परिवर्तन

मैं शालिनी। आप सबको आश्चर्य होना स्वाभाविक है। 15 जनवरी का ही मेरा बर्थडे आप सभी को याद है। फिर आज 18 मार्च को जन्म दिन की इस पार्टी का क्या कारण है? चरित्रहीन शराबी पति के कारण प्रतिदिन मर रही थी। तनाव घुटन की पराकाष्ठा थी। तन-मन की चोटों को सहन करने की शक्ति नहीं रही। कर्तव्य निभाने का पूरा प्रयास किया। पर उज्ज्वल चरित्र पर गलत आरोप नहीं सहन कर पाई। अदालत की लंबी लड़ाई के पश्चात आज ही तलाक का प्रमाण पत्र प्राप्त हुआ है। जीवन का यह परिवर्तन का दिन ही अब मेरा असली जन्म दिन है। खुली हवा में सांस ले पाऊंगी। कष्टों का यह मुक्ति पर्व ही भविष्य में मेरा बर्थडे रहेगा। पुनर्जन्म हुआ है आज मेरा। कोर्ट से प्राप्त तलाक का प्रमाण पत्र आज मेरे लिए सर्व श्रेष्ठ ग्रीटिंग कार्ड है। मुझे विश्वास है कि मेरी लड़ाई कई महिलाओं के लिए प्रेरणा का कार्य करेंगी। भीगी पलकों से सभी अतिथि शालिनी को शुखद भविष्य के लिए शुभकामनाएं दे रहे थे एवं जीवन के इस सकारात्मक परिवर्तन को साहसिक निर्णय के लिए साधुवाद दे रहे थे।

●



भरत कोराणा
जालौर, राजस्थान

परिवर्तन

पायल देर सवेर उठती थी। आभासी दुनिया में खोने के कारण उसको पता ही नही था की कब सोना और कब उठना है। अमीर परिवार से होने के कारण उसके ऊपर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नही था। पापा उसको बहुत प्यार करते थे। इसलिए अपनी हर बात मनाने के लिए वो जिद करके मनवा लेती। अगर पायल रानी के आँखों में आँसू आ जाते तो फिर उसकी बात माननी ही पड़ती थी। धीरे-धीरे पायल उच्च शिक्षा की और बढ़ी। पैसा उसके नजरो में अपनी वैल्यू खो चुका था। पायल पैसों को महत्व नहीं देती थी। कभी अपनी सहेलियों के साथ पकौड़ी खा कर खुद बिल दे देती तो कभी चाट के ठेले पर खूब आनंद से खाती। पायल के पापा शिक्षक थे और पायल एक ही प्यारी बेटी होने के कारण सबकी पलकों पर रहती थी। पापा के राज में जो उसकी दिल की तमन्ना थी वो सब पूरी की।

आज पायल का विवाह हो चुका है। उसके कंधों पर परिवार और पति की जिम्मेदारी है। विवाह के बाद उसके जीवन में ऐसा परिवर्तन आया की एक-एक रुपये का अच्छे से ख्याल रख रही है। अगर सब्जी वाले ने एक रुपया ज्यादा ले लिया है तो एक रुपये के लिए बोल देती और मांग कर लेती। शायद अपने पति की जिंदगी से उसने नया पाठ सिखा था इसलिए पापा के घर की ऐश मौज को छोड़कर अब वो बचत करती जाती थी। वो सोचती थी बूंद-बूंद से घड़ा भर जाता है। उसके जीवन में यह परिवर्तन आज सबको पसंद है। आज पायल भी खुश है की मै पैसों की बचत कर रही हूँ।

गौरव सिंह घाणेराव

(अध्यापक,लेखक,कवि)

सुमेरपुर, राजस्थान

मेल ID- rajputgourav.rajput@gmail.com



करण की जिंदगी बदल गयी

कल का दिन मेरे लिए बहुत अच्छा व आत्मसंतुष्टि वाला रहा।

एक अध्यापक होने के नाते कल के दिन मुझे BLO के कर्तव्य के निर्वहन के लिए बूथ पर बैठना था।

इस दरम्यान कुछ परिचित लोगो से मेल मिलाप व ग्रामीणों से बातचीत हुई।

लेकिन जो सबसे अच्छी बात रही वो यह थी कि जब मैं फ्री बैठकर पढ़ रहा था तब मेरे पास नाथ परिवार का एक बालक आया जो भैस चराता था।

अक्सर वो आते जाते नमस्ते करता था.....लेकिन कल मुझे अकेला बैठा देखकर मेरे पास आकर बैठ गया।

उसका नाम था करण.....कुछ समय की बातचीत के बाद जब वो मुझ से घुलमिल गया तो मुझे पता चला की वो साक्षर नही है और कभी स्कूल नही गया है।

शायद परिवार की कोई स्थिति ऐसी हो या घुमन्तु परिवार होने के कारण कभी विद्यालय नही जा पाया.....

फिर मैंने उस से पूछा अपना नाम लिखना सीखोगे.....तो उसने बड़े कौतुहल से हामी भरी..... मैने बेग से एक ब्लेंक पेपर निकाला व पेन से उसे उसका नाम लिख कर दिया.....मुझे देखकर बड़ा अचरज हुआ की उसने अप्रत्याशित तरीके से उसे मुश्किल से 10-15 मिनट में लिखना सिख लिया.....और उसके बाद उसके चेहरे की जो ख़ुशी थी.....उसने मेरा दिन बना दिया.....

उसके बाद एक प्रण लिया है की ऐसे बालक जहा भी होंगे कम से कम उन्हें साक्षर बनाने में अपनी भूमिका जरूर निभाउंगा...चाहे उसके लिए विद्यालय समय के बाद समय देना पड़े....और मेरे अन्य शिक्षक साथियो से भी यह आग्रह करना चाहूँगा की आप भी इसे एक मुहीम की तरह लेवे..... यही एक शिक्षक की सच्ची आत्मसंतुष्टि यही है कि वो उस कारीगर की भांति कार्य करे जो एक आलिशान भवन की मजबूत नींव भरने का काम करता है।

मुझे इस बात की ख़ुशी है की मेरी हर छुट्टियों की तरह यह छुट्टी भी सार्थक रही।



पायल जैन
इटावा, उत्तर प्रदेश

तीसरी बेटी

यह कहानी पायल नाम कि लड़की कि है तीनो बहनों में तीसरी बेटी थी वो अपने माता पिता की। उसके माँ और पिता जी को हमेशा लड़के की चाह थी। लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था। उहोंने उन्हें तीसरी भी बेटी ही दी। पायल के होने के बाद उनके सपने और आस जो बेटे के लिये थी वो अब टूट चुकी थी। इसलिये वह अपने दिल में कभी उसको वो स्थान नही दे पाये।

एक दिन पायल के कानों में माँ का स्वर पड़ता है कहाँ गई देख कितना काम पड़ा है वो भागती हुई आती है हाँ माँ ! मैं अभी कर देती हूं उसकी आँखों मे उस दिन बहुत सारे सवाल थे। पायल ने अबोध स्वर में माँ से पूछा। माँ मेरे स्कूल में सबके पिता जी जब अपने बच्चों को छोड़ने आते हैं तो उनका माथा चुम के अंदर भेजते हैं । पर मुझे कभी भी पिता जी ने नहीं चूमा। ऐसा क्यों माँ? माँ के पास भी कोई जवाब नही था। माँ पायल के शब्द सुनकर भी शांत खड़ी रही।

पायल हर वक्त अपने पिताजी को खुश करने में लगी रहती थी। उसका दिल बार- बार कहता था शायद कभी पिताजी उसके सर पर हाथ फेरेंगे। कभी प्यार से उसे अपने हाथ से खिलाएंगे...

एक दिन उसने अपने पिताजी के लिये रबड़ी बनाई उस समय वह केवल ग्यारह साल की थी। उस दिन उसे पिताजी का बेसब्री से इंतजार था। वो बार-बार गेट पर जाती उनकी आने की राह देखती। जब पिताजी आये पायल बहुत खुश थी। वो भागकर गई और पिताजी को रबड़ी लाकर दी। उसने पिताजी से पूछा कैसी बनी है पिताजी। पिताजी की तरफ से कोई उत्तर नही आया । वो सोच रही थी आज तो पिताजी खुश होकर मुझे भी अपने हाथों से रबड़ी खिलायेंगे। एक ऐसी आस लेकर वो खड़ी थी जो कभी पूरी होनी ही नहीं थी। जब पिताजी ने रबड़ी खाकर उसको झूठे बर्तन दिये उस दिन एक बच्ची का कोमल हृदय टूट चुका था।

जब उसके भाई का जन्म हुआ। तो घर मे दिवाली जैसा माहौल था। पिता जी ने सदैव भाई को अथाह प्रेम दिया। पायल का बचपन सिर्फ अपने माँ और पिताजी के प्यार के लिये सिसकता रहा। शायद कभी भी किसी को इस बात का अनुभव ही नहीं हुआ कि एक बचपन दर्द में डूब चुका है ।

जब पायल का भाई बड़ा हुआ तो उसने वो मान सम्मान माँ और पिताजी को नहीं दिया जिसके वह हकदार थे। बेटियों की शादी हो जाने के बाद माता जी पिताजी को अहसास हो चुका था कि बेटियां घर के लिये क्या वरदान होती हैं उनकी सोच में एक नया परिवर्तन आ चुका था। उनको अहसास हो चुका था कि बेटा बेटी सब बराबर होते है लेकिन तब तक एक बेटी का बचपन प्यार के आस में दम तोड़ चुका था।●

अंजना अग्रवाल

बबीना केण्ट

झाँसी (उ. प्र.)



दृष्टिकोण

बुआ को सुजाता भाभी में हमेशा खोट ही दिखाई दिया। अपने साथ कोई मोटी रकम जो लेकर नहीं आई... खैर भाभी भी कब तक चुप रहती, जाने-अनजाने विरोधी स्वर निकलने ही लगे। छोटी-मोटी बहस के साथ गाड़ी दौड़ती रही, पर छोटे इंजीनियर बेटे की नई-नई ससुराल से मिले उपहारों की बाढ़ में तो बुआ डूब ही गयीं। अब तो सुजाता नजर ही न आती उन्हें ।

एक महीने बाद बहु तो बेटे के साथ शहर जा बसी पर बुआ का गुणगान नहीं रुका। सुजाता कभी हँसी में टालती तो कभी चिड़कर रह जाती। इक शाम सुजाता का पारा भी हाई डिग्री पर पहुँच गया और आनन फानन में कह उठी -'इतने अच्छे है आपके छोटे बेटा-बहु तो वहीं जाकर क्यों नहीं रहती, एक बार भी साथ लेकर न गये... बड़ा शौक है न आपको शहर घूमने का... फिर क्यों न गयीं... वो तो हमसे सम्पन्न भी है क्यों न ले जाते फिर ।'

समर के डाँटने पर उसे अपनी गलती का अहसास हुआ

पर बिफर पड़ी -'मैं भी सुन-सुन कर थक जाती हूँ।'

तमाशा तो अब शुरु हुआ...बुआ ने छोटे को फोन घुमाया ,और जिद पकड़ ली वह कल ही छोटे के साथ जायेंगीं। सुजाता ने बार-बार माफी मांगी, समर ने बहुत मनाया पर बुआ टस से मस न हुईं। आखिर दो दिन बाद छोटे के घर रवाना हो गईं।

दो महीने बाद बुआ लौटी तो बहुत बदली-बदली शांत थी। छोटे का फोन आया - 'भाई माँ शहर के माहौल में एडजस्ट नहीं कर पा रही है... तबियत भी सही नहीं रहती... हम दोनों जॉब वाले हैं... देखभाल कैसे होगी.. हमें टाइम भी नहीं मिलता.. बार -बार डॉ. के पास कैसे ले जायें, मैं आकर मिलता रहूँगा, माँ का ध्यान आप ही रखिये पैसे की जरुरत हो तो मैं भेज दिया करुँगा।' सुजाता चुप न रह सकी... ' नहीं देवरजी हमें अपनी माँ का ध्यान रखने के लिए आपके पैसों की जरूरत नहीं है'

इतना सुनते ही बुआ सुजाता को गले लगाकर बिलख पड़ी। आँसूओं के साथ दोनों के मन का मैल बह गया.. अब जो रिश्ता बना वह खट्टा-मीठा और भी गहरा था। दृष्टिकोण परिवर्तन की नई सुबह का आँरभ हुआ।



यशवंत राय श्रेष्ठ

दुबौली, गोरखपुर

परिवर्तन

आनंदी अपने 6 साल के बेटे अंशु का हाथ पकड़ कर डांटते व घसीटते , बड़बड़ाते हुए जा रही थी। खबर दार अंशु बार - बार मना करने पर भी नहीं मानते हो । इस मनहूस के पास आकर खेलते हो। इसका तो मुंह देखना पाप है, कलमुहा है , औलाद देखना तो दूर ऐसा कर्म है, कि बीवी को भी खा गया। अंशु बार-बार कह रहा था "मां मां चाचू अच्छे हैं । मैं उन्हीं के पास खेलूंगा। मम्मी चाचू अच्छे हैं"। अंशु के चाचू बोले भाभी मुझे भला बुरा जो कहना है कहो कोई हर्ज नही , अंशु को तो मैंने ही बुलाया है, उसका कोई दोष नहीं , दोषी तो मैं हूं। अंशु की मां और गुस्से में अंशु को सीढ़ियों पर घसीटते हुए लेकर चले जा रही थी। अंशु को लगा कि आज मां गुस्से में है और बिना पीटे मानेगी नहीं।

अंशु हाथ छुड़ाने की कोशिश कर रहा था। इसी बीच हाथ छूट गया और अंशु सीढ़ियों से लुढ़कते हुए नीचे गिर पड़ा। अंशु के सिर में गहरी चोट लगी और खून से लथपथ हो गया। अंशु तेज-तेज़ से "चाचू-चाचू" चिल्लाने लगा जब तक चाचू दौड़ कर आए, अंशु को गोद में उठाए, तब तक अंशु अचेत हो चुका था। उसी पल सीढ़ियों से उतरते हुए मां आनंदी अंशु के पास पहुंची और चाचू के गोद से अंशु को छिनते हुए फिर भला बुरा कोसने लगी। अंशु के चाचू ने कहा कि भाभी यह कोसने का समय नहीं है, अंशु को किसी अच्छे अस्पताल में ले चलते हैं। अंशु की मां ने कहा कि तुम्हारे जैसे कलमुहे की जरूरत नहीं है मैं अपने बेटे का इलाज करा लूंगी।

तब तक के दो-चार लोग इकट्ठे होकर किसी तरह से अंशु को अस्पताल ले गए। अस्पताल जाकर अंशु के सर में 5 टांके लगे और अंशु बेसुध ही पड़ा रहा श। डॉक्टरों ने कहा कि कुछ समय लगेगा अंशु होश में आ जाएगा। पीछे से अंशु के चाचू पड़ोसियों से पूछ कर अस्पताल पहुंच चुके थे। पर अंशु की मां आनंदी ने अंशु के पास जाने से रोक दिया। दो घंटे बाद अंशु होश में तो आया लेकिन आंखें नहीं खोला रहा था। मै चाचू के पास जाऊंगा एक ही रट लगाए जा रहा था। अंशु की मां आनंदी और डॉक्टरों ने अंशु को बहुत समझाया कि तुम्हारे चाचू यही है आंखें खोलो बेटा। अंशु मानो किसी की सुनी ना रहा हो। एक ही रट लगाए जा रहा था, चाचू के पास जाऊंगा, चाचू के पास जाऊंगा। अंशु की मां जिद लिए बैठी थी , कुछ भी हो जाए पर उस कर्मजले से दूर ही रहना है। इसी घटनाक्रम में 3 घंटे और बीत गए।

अंत में डॉक्टरों ने कहा कि अगर अंशु को कुछ हो गया तो इसकी जिम्मेदार अंशु की मां खुद होगी। बच्चे के कानों में चाचू की आवाज जब तक नहीं जाएगी, तब तक अंशु नहीं उठेगा। अंशु को भावनात्मक आघात पहुंचा है, आनंदी जी कृपया जिद छोड़ दीजिए। अन्यथा आप बच्चे से हाथ धो बैठेंगी । अंशु की मां ने डॉक्टरों के शब्दों को पूर्ण होने से पहले ही बात काटते हुए बोली कि नहीं ऐसा नहीं होगा। मैं अंशु के चाचू को बुलाती हूं ,अंशु के चाचू को संदेश भेजा लेकिन अंशु के चाचू आने से डर रहे थे। भाभी कहीं भला बुरा फिर से कहेंगी और सबके सामने कोसेंगीं। आनंदी ने अस्पताल के बाहर अंशु के चाचा को बुलाने के लिए निकल ही रही थी कि गेट के सामने देखा अंशु के चाचा डबडबाई आंखों से आंसू लिए अस्पताल के दरवाजे की तरफ देख रहे हैं थे। आनंदी ने जैसे उन्हें आने का इशारा किया अंशु के चाचू दौड़ कर पास आए और बोले, "हां भाभी कहो मेरा अंशु तो ठीक है" । यह शब्द सुनते ही आनंदी ने कहा कि कुछ भी ठीक नहीं है। यह सुनते ही आंसू के चाचू ने कहा "भगवान पर भरोसा रखो भाभी सब ठीक होगा" ।

चाचू अंशु के कमरे में गए और अंशु को एक ही रट लगाए हुए सुना कि मुझे चाचू के पास जाना है, मुझे चाचू के पास जाना है। चाचू ने जोर से बोले कि, "बेटा , मैं तो यही हूं ,आपके पास ही हूं। मैं तो कहीं नहीं गया उठो" । यह शब्द सुनते ही अंशु ने आंखें खोल दी और चाचू ने अंशु को गोद में उठा लिया चाचू के आंखों से आंसू गिरने लगे। आनंदी ने हाथ जोड़कर कहा देवर जी मुझे माफ़ कीजिए। बीच में बात काटते हुए चाचू ने कहा "भाभी, कैसी माफ़ी मेरा अंशु ठीक हो गया" । आपका हृदय परिवर्तन मेरे लिए आशीष है , सौभाग्य है।

●





रश्मि पाण्डेय

परिवर्तन

'अजी सुनते हो शिवा को लड़के वाले देखने आ रहे हैं'। (पिता ने ख़ुश होकर शिवा की माँ से कहा)
माँ - क्या (ख़ुशी से) अपनी शिवा को देखने आ रहे हैं। पिता - हाँ भई हाँ (उत्साहित होकर) बस तुम तैयारी मे लग जाओ । माँ - जी अच्छा ; सब हो जायेगा (चौंककर) अरे अभी शिवा कालेज से नहीं आयी, इतनी देर हो गई है ।
पिता - अरे आती होगी । (तभी दरवाजे की घंटी बजती है) लगता है शिवा आ गयी ; (दरवाजा खोलकर) आ गई बेटी? शिवा - जी पिता जी, माँ -आज इतनी देर कैसे हुई?
शिवा - अरे माँ कालेज मे कॉम्पटीसन होना है बस उसी की तैयारी मे देर हो गयी ।
पिता - अच्छा उसे कुछ खाने को तो दो भाग्यवान।
माँ - हाँ हाँ ज़रूर, चढ़ा लो सर पर कुछ कहो तो बीच मे ही बात काट देते हो।
पिता - अरे नहीं भाग्यवान! ऐसा नहीं, अब अपनी शिवा मेहमान ही तो है इस घर की।
माँ - हाँ एक बार ब्याह हो जाये फिर अपने घर जाकर करे जो करना हो।
राहुल - (शिवा का भाई)अरे वाह अब दीदी का कमरा मेरा हो जायेगा (दौड़कर शिवा के पास जाता है)। पिता - (दरवाजे की घंटी सुनकर) अरे भाग्यवान लगता है वो लोग आ गये (दरवाजा खोलकर) अरे आइये आइये (हाथ जोड़कर) माँ - देख शिवा जब तुझे बुलाऊं तो ठीक से आना और जो भी पूछें उसका अच्छे से जवाब देना। शिवा -जी माँ, पर माँ मुझे अभी पढ़ाई करनी है।
माँ - अब अपने घर जाकर पढ़ाई करना (फिर चली जातीं हैं)।
मेहमान - मुझे आपकी बेटी पसन्द है बस आप शादी की तैयारी कीजिए बहन जी (सब एक दूसरे को मिठाई खिलाते हैं) (मेहमान चले जाते हैं सब एक साथ बैठे हैं)
शिवा -माँ अभी मुझे पढ़ना है। माँ -बेटी जितनी जल्दी अपने घर चली जाये अच्छा है। अब वहीं करना जाकर अपनी पढ़ाई (समझाती है)। शिवा - माँ ये घर क्या मेरा नहीं? जिस घर मे मेरा बचपन बीता वो घर मेरा अपना क्यों नहीं? जिस घर को मैंने देखा ही नहीं वो मेरा कैसे ? क्या बेटियों का अपना कोई घर नहीं होता बताइये न। पिता जी! अपने घर को पराया और पराये घर को अपना क्यों कहा जाता है? बोलो न माँ क्या बेटियों की अपनी कोई पहचान नहीं? वो कौन सा घर है माँ! जो मेरा हो जिस घर को छोड़कर मुझे जाना न पड़े ? पिता जी! मेरी पहचान क्या है?
परिवर्तन ही मेरी पहचान है या पहचान ही परिवर्तन है ?

●

आशुतोष तिवारी

जोधपुर, राजस्थान



भावना

बात उन दिनों की है जब मैं गोरखपुर विश्वविद्यालय में परास्नातक की पढ़ाई कर रहा था। मेरा विषय रसायन शास्त्र था। क्लास में हम सभी २० लोग थे। हम लोग १० घंटे एक साथ रहते थे।शुरू में यह समझ में नहीं आता था कि किसको अपना और किसको गैर समझें।मगर एक साथ रहते रहते हम सब एक दूसरे के बहुत ही नजदीक हो गये थे। कुछ ऐसे भी थे जो बात बात पर झगड़ा भी करते थे। उनके लिए मैं यही सोचता था कि भगवान की कृपा हो और उनके व्यवहार में परिवर्तन आते।

धीरे धीरे समय बीतता गया। पढ़ाई के साथ हम सब अपने मन की और परिवार की बातें एक दूसरे से साझा किया करते थे। फाइनल की परीक्षा का समय आ गया। परीक्षा भी हो गयी और परीणाम भी आ गये।

अब वो समय आया जो मन की भावनाओं को झकझोर देता था। पढ़ाई पूरी होने के बाद हम सब घर जाने के लिए तैयार हो रहे थे। तभी एक मित्र ने कहा कि हम सब पार्टी रखते हैं। पार्टी में खूब मौज-मस्ती हुआ। अंत में सबकी आंखें नम थी। उनकी भी आंखें नम थी जो पूरे साल बात बात उलझते रहते थे। वो लोग गले मिल कर अपने गलती पर अफसोस जाहिर किये। अन्ततः उनका हृदय परिवर्तन देख मन काफी प्रफुल्लित हुआ।

जीवन के कुछ अनमोल क्षण हमेशा याद रहते हैं।



प्रभु राम गरासिया

भीमाणा, तहसील - बाली,
जिला - पाली (राजस्थान)
7742632874

परिवर्तन

पिताजी के एक वाक्य ने मेरे जीवन में परिवर्तन ही कर डाला।

यह घटना उस वक्त की है जब मैं कला स्नातक द्वितीय वर्ष में अध्यनरत था और मेरी शादी परीक्षा के पूर्व दादा जी के कहने पर करवा दी थी। मैं एक छात्र होने साथ ही बेरोजगार भी था। इसलिए चिंता का छाया हमेशा ही सिर पर मंडराता रहता था। कला स्नातक द्वितीय वर्ष की परीक्षा समाप्त हो गई थी और गर्मियों की छुट्टियों के दरम्यान मैं अपने गांव में घर पर ही था। तभी मेरे मित्र ने दूरभाष के द्वारा मुझे सूचना दी कि कला द्वितीय वर्ष का परिणाम जारी हो गया है। तब मैंने अपने अनुक्रमांक दिए और उसने मेरा परिणाम देख लिया था। हुआ यह कि मेरे अंक बहुत कम आए थे । परिणाम अच्छा नहीं रहा । जब पिता जी को यह बात पता चली तो उन्होंने क्रोधावेश में आकर ऊंची आवाज में कहा "अब कोई सरकारी नौकरी मिलने वाली नहीं है, तुझे अब दुकान लगाकर देते हैं और काम धंधा के साथ साथ पढ़ाई भी कर लेना।" पिताजी के मुंह से निकले शब्द कर्णछेदी शब्द थे । एक पल तो ऐसा लगा कि आसमान मुझ पर गिर गया है। पिता जी द्वारा कही गई बात को याद करके रात को एकांत में जा कर बहुत रोया। आंखो के नीर किसी को नहीं बताए। कानों में गूंजते कड़वे शब्द सुई की भांति दर्द देते थे ।

तब से मैंने भी ठान लिया कि अब मैं हिम्मत नहीं हारूँगा। उसके बाद से ही मैंने अध्ययन जारी रखते हुए बी. ए. और बीएड भी कर ली। कई प्रतियोगिता की परीक्षाएं दी लेकिन चयनित नहीं हो पाया। शादी पहले हो गई थी इसलिए घर से खर्चा मांगना शर्मिंदगी महसूस होती थी। तब मैं रोजगार की तलाश में अख़बार में विज्ञापन देखा करता था और विज्ञापन के अनुसार मैंने विद्यालय में अध्यापन कार्य हेतु मेरा साक्षात्कार भी लिया गया। उसमे मेरा चयन हुआ और हाथ खर्चा चल जाए इसी कारण मैंने वहां पर अपनी सहमति भी दे दी। प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी और हाथ खर्चे के लिए गांव से दूर उस निजी विद्यालय में अध्यापन कार्य हेतु प्रवेश लिया। वहां वेतन बहुत कम मिलता था लेकिन किस्मत का मारा क्या न करता, ऐसा हो गया था। मैं विद्यालय जाता और पूर्ण अवकाश के उपरांत अपनी तैयारी करता था।

कड़ी तैयारी और मेहनत से मुझे मेरी मंजिल यानि अध्यापक बनने का सपना जो देखा वो पूरा हो गया। शायद पिता जी मुझे उस वक्त वो कड़वे शब्द ना बोलते तो मैं कहीं अध्यापक की जगह मजदूरी करते दिखाई देता। ●

भावना गौड़
ग्रेटर नोएडा(उत्तर प्रदेश)



परिवर्तन

दस वर्ष पहले की बात है जब हम जम्मू में रहा करते थे। पहाड़ी लोगों का रहन सहन एकदम सामान्य हुआ करता है, हम भी उनमें से एक थे। सभी बहन भाई का जन्म पहाड़ी इलाकों में ही हुआ, शहरी जीवन से बिल्कुल अंजान थे, नहीं पता कि कैसे बोलते, रहते या खाते हैं, सभी बातों से अनभिज्ञ रहे। जब दादाजी की मृत्यु हुई तो पापा हमें ग्रेटर नोएडा लेकर आएं। अक्सर दादाजी के घर में भीड़ हुआ करती थी मैं मम्मी से कहती ये लोग क्यू आए हैं वो कहते बेटा जब कोई भगवान के घर जाते है तो उनके घर शोक मनाने सब आते हैं, मैं इतनी भीड़ देखकर घबराया करती थी। मम्मी इन सभी को बोले हमारे यहां नहीं आए। माँ हँस दी बोली मेरी लाड़ो ऐसा नहीं कहते, दादाजी की अरष्टि तक सभी आयेगे.

ये माहौल का परिवर्तन मैंने कभी नहीं देखा शहरों में आना जाना, फिर यहा के रीति रिवाज बिल्कुल भिन्न, भाषा भिन्न... यहा तक की सब्जी के नाम और मिठाई के नाम भी भिन्न। हम कहते माँ ये क्या है, शहरों का रहन सहन बिल्कुल भिन्न था, हमें सब बोला करते कि ये बच्चे पहाड़ी इलाकों से है वो पन्द्रह दिन हमनें बहुत मुश्किल से निकाले। माँ बोली लाड़ो अब हम यही रहेगें मैंने बोला मैं नही रहूंगी। पापा भी परेशान हो गए कि बच्चों को कैसे समझाए फिर एक दिन हम सभी को बाजार घुमाने लेकर गए इतना शोरगुल की सहन करना मुश्किल हो गया। गाड़ी की आवाज बाजार की रौनक पापा के परिचित लोग हमसें मिलते तो हम बोलते हमें नहीं मिलना, घर चलो अपने जम्मू आदत तो शांत माहौल में रहने की थी। पापा ने बोला लाड़ो चलेगें वहा भी,जब यहा आए हैं तो कुछ खरीद लो,देख लो बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था हम सभी को धीरे धीरे, भीड़ देखने की आदत हो गई।

पापा फिर हमें वापस जम्मू ले आएं नहीं पता था जम्मू आखरी बार आना होगा। पापा ने स्कूल से हमारी छुट्टी का पूरा इंतजाम कर लिया था, क्योंकि रहना अब ग्रेटर नोएडा में ही है, बहुत रोएं हम नहीं जाना हमें वापस नहीं जाना पापा बोले दीदी की शादी है, करनी है तो जाना तो होगा ही। बस धीरे-धीरे ये परिवर्तन जीवन में होने लगे.

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, सभी को स्वीकार करने होते है, कभी अपनी इच्छा से तो कभी मजबूरी में ,अब यही हमने अपना लिया आज बहुत खुश हैं इसी परिवर्तन की सोच से कि पापा का किया हुआ वो निर्णय कितना अच्छा रहा। यहाँ आकर हर तरह की भाषा, रहन सहन, खाना पीना समय के साथ सीखा, ये जीवन है। सभी के समय में परिवर्तन आते हैं कभी शिक्षा से तो कभी विवाह करके दूसरे के घर जाना जीवन चक्र परिवर्तन ही है, जिसे हमने अपनाया है ! ●



अर्चना जोशी

भोपाल, मध्यप्रदेश

परिवर्तन

आज वर्तमान परिस्थिति के कारण मेंरा बेटा घर आया हुआ था। होस्टल बंद हो गये थे। दसवीं की परीक्षा दे रहा था, बड़े दिन के बाद घर आया तो मैंने उसे घर का कोई भी काम न करने दिया। दिनभर पेड़ की छांव में पड़ा रहता कभी मन हुआ तो नहर खेत नाप आता। एक दिन मैंने कहा दिन भर पड़ा रहता है खेत जाकर बाबूजी का हांथ बंटा दे मन नहीं लग रहा तो। वह चिढ़ गया, बड़बड़ाता मंदिर तक चला गया। मैं भी अपने काम में लग गयी जैसा गया वैसे ही रात

तक बड़बड़ाते वापस आ गया और पता नहीं कितने दिन रूकना पड़ेगा इस फुहड़ गांव में। मै और ये दोनों सोच में पड़ गये कुछ गलत तो न कर दिया शहर भेज कर। इसका तो गांव की मिट्टी से लगाव ही मीट गया। पर बड़ा होता बेटा है ये सोच कर शांत हो गये। एक सप्ताह तक सब ठीक रहा पर रात पंचायत से लौट बड़बड़ाने लगा, लगता है इस साल यही रहना पड़ेगा। परिस्थिति से हम भी अनभिज्ञ न थे पर कुछ बोल न पाये। सुबह एक बड़ा परिवर्तन दिखा बेटा सिर पर गमछा बांधे मैया को जगा रहा था बाबूजी को सोण दे, खेत में मै पानी फेर आता हूं खेत भी देख आऊंगा बड़े दिन हुए आखिर मेंरे ही है। आंखें बंद किये खटियां पर पड़े बाबूजी मुस्कुरा उठे। बेटे खेत जाते ही बोले देख माटी की महक खींच लाई न यह देख मेरा भी हृदय परिवर्तन हो गया कि शिक्षा कभी माटी से दूर नहीं करती।

पूनम कपरवान
देहरादून, उत्तराखंड



परिवर्तन

"""मैं उडना चाहती हूँ नमन। नहीं रह सकती अब तुम्हारी बंदिशों में तुम और तुम्हारी परिवार सेवा नहीं कर सकतीअब मैं "रीना नमन से लड़ रही थी।

"रीना ये घर आपका है मैं आपका ।मेरे माँ तुम्हारी तीन सदस्य ही तो है इस मकान में""!!!!मत बढाओ इच्छाएं अपनी जीना मुश्किलों भरा हो जाय!!!

"""""मैं जा रही हूँ मत रोको """और अटैची लेकर बाहर दनदनाती हुई चली गई ।

नमन ने क्या नहीं किया था रीना के लिए सब कुछ तो था घर वार उड़ती औरत कहाँ कबू में रहती है।

रीना अहम के घर चली गई और अहम ने उसे अस्वीकार कर दिया।

"""अहम ऐसा न करो मैं अपना घर वार पति सब कुछ छोड़कर तुम्हारे पास आए हूँ और तुम मुझे अस्वीकार कर रहे हो ""!

"""""मैं परख रहा था तुमको रीना परिवर्तन की तड़प एक औरत प्यार की खातिर घर बरबादी पर ले आई । हद है जो औरत पति की न हुई मेरी कैसे हो सकती है। आज पति का घर छोड़कर मेरे पास कल मुझे छोड़कर किसी और के पास । जा सकती हो जाओ जहाँ मन करे ।"""""

अहम ने दरवाज़े को बंद कर दिया रीना बाहर खड़ी पछता रही थी।

नमन ने उस दिन खोजबीन की पुलिस की मदद ली। रीना एक पुल पर खड़ी आत्महत्या की कोशिश में थी कुछ भीड़ ने बचाकर पुलिस को बुलाया। नमन को बुलाया गया । रीना सुबक रही थी।पछतावे के आँसू बह रहे थे। नमन ने क्षमा कर दिया और कहा सुबह का भूला अगर शाम को घर आ जाए तो उसे भटका हुआ नहीं कहते """"



चँद्रमुखी सहरावत

लोनी, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश।

परिवर्तन

पार्वती अपनी बहू स्नेहा पर न जाने किस बात पर आग बबूला हो रही थी। कह रही थी कि मैं भी कभी बहू थी। मैंने कभी अपनी सास को जवाब नहीं दिया। तुम्हारी जबान देखो कैसे कैंची की तरह चलती है। स्नेहा पढ़ी लिखी है। वह तर्कशील बात करती है। उसने बड़ी विनम्रता से अपनी सास से कहा -माँ अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं। वक्त के साथ कुछ चीजें बदलती रहती हैं। बरामदे में बैठे स्नेहा के ससुर सब कुछ सुन रहे थे। वे अंदर गए और बोले - बहू ठीक कह रही है पार्वती, तुम भी अपनी सोच में परिवर्तन लाओ। बहु बेटी से भी ज्यादा प्यार और सम्मान की हकदार होती है, क्योंकि बेटी तो सेवा लेकर जाती है और बहू आकर सेवा देती है।

कमल शर्मा "राही"

बारमेड, राजस्थान



परिवर्तन

नये जिला पुलिस अधीक्षक के कार्य ग्रहण करने के बाद यह पहली बैठक थी, जिसमें जिले के सभी थानाधिकारियों को उपस्थित होना था!

मीटिंग के दौरान एस.पी. सहाब बार-बार मेरी तरफ घूर-घूर कर देख रहे थे! मैं भय से आशंकित था, न जाने किसी ने मेरे थाने और मेरी कार्यशैली बारे में उनको कोई गलत सूचना तो नहीं दे दी!

मीटिंग खत्म होते ही उन्होनें मुझे अपने चैम्बर मे पर्सनल बुलाया, भय से मेरा कलेजा कांपा जा रहा था, मैं दबे कदमों से उनके चैम्बर मे पहुंचा! मुझे देखते ही वो उठ खडे हुऐ और बोले 'आप मास्टर दीना नाथ जी है न ? मुझे नहीं पहचाना मैं आपका पुराना छात्र हरिया' !

हरिया का नाम सुनते ही मेरे ज़हन में बीस साल पहले का वह दृश्य उभर आया जब मैं पुलिस मे आने से पहले बतौर अध्यापक पहली बार रेगिस्तान के बोर्डर स्थित गाँव मे अध्यापक लगा था ! बिन माँ-बाप का हरिया मेरे विद्यालय का सबसे शैतान और अनुशासन हीन छात्र था, जिससे विद्यालय तो क्या पूरा गॉव परेशान था, वह रोजाना शैतानियां, शिकायते और नई परेशानियां खड़ी करवाने वाला छात्र था!

'पर आप तो.....?' मेरा वाक्य पूरा करने से पहले वो बोल पड़े 'हां मास्टर सहाब आपके जाने के बाद मेरा एक मात्र सहारा मेरी दादी भी चल बसी और मेरी हरकतों से परेशान होकर गाँव वालों ने मुझे गाँव से निकाल दिया !

मैं शहर आकर मजदूरी करने लगा, वहां पहुंच कर मुझे जीवन की वास्तविकता का अहसास हुआ! मजदूरी के साथ अपनी पढ़ाई जारी रखी जिस जेलर सहाब के यहां मैं मजदूरी करता था उनकी प्रेरणा और उनके लडके रोहीत की संगत से असर ने मेरे मे नये आत्मबल का संचार कियान किया! मैंने रोहीत के साथ सिविल सेवा की तैयारी की और परीक्षा दी तथा पहले ही प्रयास में सफल रहा और भारतीय पुलीस सेवा में चयनित हुआ ,आज आपके सामने हूँ!' मैं हरिया से एस.पी. हरी सिंह की इस परिवर्तन यात्रा को एक बार फिर सेल्यूट करते हुऐ उनके चैम्बर से बाहर आया!



के सी टण्डन

रायगढ़ (छ. ग.)

परिवर्तन

पार्वती आज सुबह जल्दी उठ कर तैयार हो गई, माँ से नास्ता मांग कर नास्ता की और अपनी स्कूटी ले कर अपने प्रिय सहेली काजल के घर चल पड़ी।

काजल पार्वती की बहुत अच्छी सहेली है। दोनों स्कूल में एक ही कक्षा में पढ़ती है और इसी वर्ष कक्षा 11वीं की परीक्षा पास की है। काजल के घर मे काजल और उसकी माँ रहते हैं, उसके पिताजी का पिछले वर्ष ही बीमारी के कारण देहांत हुआ है।

पार्वती काजल के घर पहुंची तो देखी, काजल अभी तक तैयार नही हुई है, घर मे झाड़ू पोंछा कर रही है।

काजल को ऐसी देख पार्वती बोली- " क्यों महारानी जी तुमको स्कूल नही जाना है क्या आज एडमिशन का आखिरी तारीख है, तेरे इंतजार में मैं आज तक एडमिशन नही ली हूं"।

काजल ने पार्वती के बातों का कोई जवाब नही दिया। तब पार्वती ने फिर से वही बात दोहराई। इस बार काजल ने धीरे से बोली -"मै अब आगे नही पढूंगी".....

पार्वती ने फिर उसकी नही पढ़ने का कारण पूछी, तो बताई कि "मम्मी ने बहुत कोशिश की लेकिन किसी के पास उधार मे भी हजार रुपये नही मिली, मेरी एडमिशन के लिए और आज अंतिम तिथि है। इसलिये मै अब आगे नही पढ़ सकूंगी"

इतना सुन कर पार्वती के दिल को भी बहुत धक्का लगा .....क्योकि काजल उसकी प्रिय सहेली है।

पार्वती भी स्कूल नही गयी, सीधे घर आई अपने पापा प्रदीप बाबू के पास और अपने पापा को सारी बात बतायी।

प्रदीप बाबू गांव के जमींदार का इकलौता बेटा है, पढ़ा-लिखा एवं सरकारी नौकरी भी करता है। प्रदीप बाबू बहुत नेक दिल इंसान एवं मिलनसार व्यक्ति हैं । ओ गांव के हर आदमी के सुख-दुःख में सामिल होता है और यथा सम्भव अपने तरफ से सहयोग भी करता है, इसलिए गांव में सभी उसका बहुत इज्जत करते हैं।

पार्वती की बात सुन कर प्रदीप बाबू को बहुत दुःख हुआ कि गरीबी के कारण गांव की एक होनहार बेटी की पढ़ाई रुक जाएगी।

उसने अपनी बेटी पार्वती को काजल को बुलाने के लिये भेजा।

पार्वती काजल को बुला कर अपने पिता के पास घर ले आई।

प्रदीप बाबू ने काजल को अपने पास बुला कर बोला-"काजल तू मेरे को क्यो नही बताई एडमिशन के लिए रुपये नही मिल पाया तो। तू मेरी बेटी की अच्छी सहेली है न, तो तू भी मेरी बेटी ही हुई और मेरे रहते मेरी बेटी की पढ़ाई नही रुकेगी। ले हजार रुपये और तुम दोनों अभी स्कूल जाओ और कक्षा 12 वीं में एडमिशन ले कर आओ"।

काजल कुछ बोलने वाली थी कि उसकी बात को काटते हुये प्रदीप बाबू ने बोला -" और हां इस एक हजार रुपये को मै तेरे को फ्री मे नही दे रहा हूं, मै इसको ब्याज के साथ साल के अंत मे फर्स्ट डिवीजन के रूप मे वापस लूंगा"।

काजल के आँखों मे आँसू भर आये। पार्वती ने उसके कंधे मे हाथ रखा और एक हजार रुपये पकड़ाते हुये उसको अपने साथ ले चली।

काजल और पार्वती ने स्कूल जा कर कक्षा 12 वीं मे एडमिशन लिया। दोनों ने साल भर खूब मन लगा कर पढ़ाई की और सचमुच दोनो ने फर्स्ट डिवीजन में पास हो गयी।

इसी बीच प्राइमरी स्कूल टीचर की विकेंसी निकली जिसमे काजल ने भी एप्लाई किया और फर्स्ट डिवीजन होने के कारण उसकी प्राइमरी टीचर में चयन भी हो गयी।

काजल आज सरकारी स्कूल में टीचर की नौकरी कर रही है और अपने माँ के साथ खुशहाल जीवन बिता रही है।

काजल आज भी सोचती है उस एक हजार रुपये के बारे मे जो उसको उस दिन समय पर नही मिलता तो आज काजल न जाने कहां होती। उस एक हजार रुपये ने काजल की जिंदगी में कितना बड़ा परिवर्तन ला दिया।





अंशु प्रिया अग्रवाल

मस्कट, ओमान

माँ का हृदय परिवर्तन

दुबई में एक प्रतिष्ठित भारतीय चिकित्सक के बच्चे की दसवीं जन्मदिन की तैयारी चल रही थी। मां ने अपने सभी विदेशी मित्रों के बच्चों को निमंत्रण भेजा था। सभी विदेशी गौर वर्ण बच्चों को स्टेटस सिंबल दिखाने के लिए बुलाया गया था, पार्टी की शान होते हैं यह अंग्रेज बच्चे मां ने चहकते हुए अपने पति से कहा। गौर वर्ण बच्चों के साथ अपना फोटो खिंचाना कितना अच्छा लगता है ।

माइकल ने कहा " डियर मॉम आई वांट टू इनवाइट माय बेस्ट फ्रेंड डेविड इन द पार्टी" (मां मैं अपने सबसे अच्छे मित्र को पार्टी में बुलाना चाहताा हूं) मां ने कहा -"हां -हां बेटा बुला लेना ।"

वह पार्टी की तैयारियों में मशगूल थी ध्यान ही नहीं रहा फिर सहसा याद आया । माइकल को मैक्रोनी और पास्ता खिलाती हुई पूछी डेविड कहां से है बेटा ? कौन सी नेशनलिटी का है ? गौरा होगा ना?

माइकल ने कहा -"वह मेरा बेस्ट फ्रेंड है मां मेरे से ज्यादा गहरा उसका रंग है। वह नाइजीरिया से है लेकिन वह मेरा सबसे अच्छा और सच्चा मित्र है। बाकी सब दोस्तों से बढ़कर डेविड मुझे चाहता है!"

मां उधेड़बुन में खोई अपने "स्टेटस सिंबल" और "बेटे के रिश्तो की अहमियत" किसका चुनाव करूं सोच रही है ॥

शायद बेटे ने उनका हृदय परिवर्तन कर दिया था।

राजपूत देवेन्द्र ठाकुर
बिलासपुर, हि० प्र०



परिवर्तन

ओए! रामू तू अभागा जब भी मेरे रास्ते के बीच आता है,मेरा कोई काम नहीं होता। तू और तेरा परिवार बिल्कुल निक्कमे है कुछ कमाना होता नहीं बस दूसरों के काम बिगाड़ते रहते हो, सेठ जी ने गुस्से में रामू को कहा और चल दिए। रामू बहुत मेहनत करता था लेकिन गरीबी उसका पीछा नहीं छोड़ रही थी और किस्मत उसका साथ नहीं दे रही थी। कई वर्षों से रामू का परिवार बड़ी मुश्किल से निर्वाह कर रहा था।

अब रामू का बेटा किशन भी बड़ा हो गया था और स्नातक की डिग्री ले चुका था। एक दिन किशन को उसके एक दोस्त ने बताया कि सिविल सर्विस की पोस्ट निकली हुई है तुम भी आवेदन कर लो। किशन ने दूसरे ही दिन जाकर आवेदन किया और तैयारी करने में जुट गया। कुछ ही दिन बाद परीक्षा की तिथि भी घोषित हो गई। रविवार को किशन ने परीक्षा दी और अपने पिता रामू को बताया कि मेरा पेपर बहुत अच्छा हुआ है। कुछ ही दिन में परिणाम भी आ गया और किशन ने प्रारंभिक परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। पूरा परिवार खुश था। इसके बाद किशन मुख्य परीक्षा की तैयारी में जुट गया और उसने मुख्य परीक्षा भी पास कर ली। फिर साक्षात्कार का समय आया और किशन ने साक्षात्कार भी अच्छी अंको से पास कर लिया और वो एक बहुत बड़ा अधिकारी बन गया। अब किशन दूसरे जिले में पुलिस अधीक्षक के पद पर तैनात हो गया।

एक दिन वही बड़ा सेठ शहर से कुछ पैसे ला रहा था कि सुनसान रास्ते में पहुंचते ही कुछ गुंडों ने उस पर हमला कर दिया। उसके पीछे पीछे किशन भी उस दिन अपने घर को आ रहा था और उसके साथ दो तीन पुलिस वाले भी थे। उन्होंने देखा कि किसी व्यक्ति को गुंडे मार रहे हैं। किशन ने पुलिस जवानों के साथ मिलकर गुंडों को बहुत मारा और पकड़ कर जेल में भिजवा दिया। किशन सेठ जी को अपनी गाड़ी में बिठाकर घर ले गया और अपने पिता रामू को पूरी कहानी सुनाई। सेठ जी ने रामू को प्रणाम करते हुए कहा कि मैं फिजूल में ही तुम्हे कोसता था। आज तुम्हारे बेटे की बदौलत मैं जिंदा बच गया। मुझे माफ़ कर दो रामू मैंने तुम्हे भला बुरा कहा, तुम्हे अभागा कहा और गालियां भी दी। लेकिन आज मुझे पता लग गया कि सबकी अपनी एक पहचान होती है बस थोड़ा समय जरूर लगता है। सबके जीवन में परिवर्तन आता है बस समय का इंतज़ार करना पड़ता है।



अभिज्ञान शाकुन्तलम्

डिब्रुगढ, असम

सात वचन

सतीश जैसे ही बस पर चढ़ा, उसकी नज़र कौशकी पर पड़ी कौशकी को घेरे हुए सतीश की माँ, भाभी , बहन कुछ न कुछ कह रही थी। सतीश दूर से बस चलने का इंतजार कर रहा था। और मन ही मन खुश हो रहा था कि हनीमून के लिए अरुणाचल जैसे सुन्दर जगह जा रहा है। जहाँ वो और उसकी प्रिया एकांत में एक दूसरे के साथ समय बितायेंगें। एक दूसरे को समझेगें और एक दूसरे के हो जाएंगे। बस के इंजन के स्टार्ट होते अजय की तंद्रा टूटी तो देखा कौशकी को सभी बाय कर रहे है उसका किसी को ध्यान ही नहीं, वह उठा और कौशकी के बगल वाली सीट पर बैठ गया। कौशकी ने थोडा खिसककर किनारा किया और खिड़की से बाहर देखने लगी सुबह का नजारा.. ..इस दृश्य को देखते ही उसे शनी की याद आ गई, कैसे कॉलेज से पिकनिक के लिए सभी आए थे । तीन- चार दिन का पैकैज था, उसी में उसे शनी से प्यार हुआ... दोनो बहुत खुश थे और टूर से लौटने से पहले सब आलंग के पहाड़ियों पर गए थे। सूरज को उगते हुए देखने के लिए दोनो हाथ पकड़े खडे थे , इतने में शनी का पैर फिसला, हाथ छूट गया और वह खाई में गिर गया। यह दृश्य उसके आँखो के सामने आते ही बहुत तेज चिल्लाई...शनी... और बेहोश हो गई काफी देर तक जब कौशकी को होश नहीं आया तो उसे बस रूकवा कर नर्सिंग होम में भर्ती कराया गया, जब होश आया तो वह केवल... शनी ..शनी.. चिल्ला रही थी। घर वालों को खबर भेजी गयी, तो सभी आए। कौशकी के माता-पिता और सतीश के परिवार वाले। कौशकी सब भूल चुकी थी, उसे बस शनी याद था...यह सब देख कौशकी के पिता टूट गए और सारी बात बताई, कौशकी उस घटना से मौन हो गई थी। बहुत इलाज के बाद बोल लेती थी, पर ज्यादातर मौन रहती थी, यही कारण था कि 'मैं नही चाहता था की सतीश उसे यहाँ लाये और मैं कारण नहीं बता सकता था, पर होनी को यही होना था...मुझे क्षमा करदो बेटा ,मैं कौशकी को अपने साथ ले जाऊँगा। मुझे माफ कर दो।

सतीश थोड़ा मौन रहा फिर कहा 'नहीं बाबुजी कौशकी मेरी जिम्मेदारी है, सात वचन में कुछ मेरे भी वचन थे, मैं इसे अपने साथ ले जाँऊगा '

आज दस साल बाद कौशकी और सतीश अपने दो बच्चों के साथ बहुत खुश है, सतीश के निस्वार्थ प्रेम ने कौशकी के घाव भर दिए और उसके मन में प्रेम द्वीप प्रज्ज्वलित किया। सतीश के धैर्य और प्रेम ने कौशकी का जीवन परिवर्तित कर दिया।

सोनल ओमर

कानपुर, उत्तर प्रदेश



परिवर्तन

रुचिका तुम!! वो भी दो-दो सूटकेस लेकर!!! माँ ने दरवाजा खोलते हुए कहा।

रुचिका : मैं उस घर मे अब एक पल भी नहीं रह सकती।

माँ : दामाद जी से फिर से झगड़ा हुआ क्या??

रुचिका : इस बार सिर्फ झगड़ा नही, पानी सर के ऊपर जा चुका है माँ। आज विवेक ने मुझपर हाथ भी उठा दिया। आपने ही पिछली बार मुझे समझाया था न कि पति-पत्नी में थोड़ा-बहुत मनमुटाव चलता है, पत्नी को थोड़ा सहना चाहिए, औरत को बनाकर चलना चाहिए। जहाँ उसकी डोली गई अर्थी भी वहीं से उठनी चाहिए। यही सब सिखाया था न आपने। अगर मैं उसी समय विवेक से अलग होने का फैसला ले लेती तो आज मुझे ये अपमान न सहना पड़ता।

जहाँ डोली जाए वहीं से अर्थी उठे जैसे नियम पुराने जमाने में चलते होंगे लेकिन अब समय परिवर्तित हो चुका है। पहले की औरतें पढ़ी-लिखी नहीं होती थी, आत्मनिर्भर न होकर अपने पति पर आश्रित होती थी, लेकिन आज की स्थिति बदल चुकी है...मैं आज की पढ़ी-लिखी औरत हूँ और अपने पति के बराबर ही कमाती हूँ। मैंने बहुत निभाकर देख ली। बस बहुत हो गया...अब मैं ये घरेलू हिंसा और नही सहन करूँगी। अब मैं न सिर्फ विवेक से अलग होउंगी, बल्कि घरेलू हिंसा के लिए उस पर पुलिस शिकायत भी करूँगी।

अब मुझे परिवर्तित होने की जरुरत नहीं है लोगों की सोच में परिवर्तन लाने की जरुरत है।



रागिनी तिवारी ' स्नेह '

प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश

परिवर्तन

अनु तुमने कैसे कपड़े पहने हैं, बाहर जा रही हो सलवार कमीज पहनो, सहेलियों की संगत ने बिगाड़ दिया है तुझे, ना किसी से बात करने का ढंग, ना ही तौर-तरीकों का इसी मोबाइल की वजह से घर के रिश्ते नाते सभी भूल गई है अपनी 19 साल की बेटी (जो जींस और कसी टॉप पहने थी) को डांटते हुए सुनीता का चेहरा आज अलग ही भाव मुद्रा में प्रतीत हो रहा था। सुनीता के इस तरह कहने पर अनु हाथ पैर पटकते हुए यह कहते हुए अंदर चली गई मम्मी तुम क्या समझोगी तुम्हें तो मेरी सारी आदतें बुरी लगती है, कभी अच्छा नहीं सोचती ना कहती हो उधर बेटा अमन भी टीवी के रिमोट को पटकता हुआ गर्दन घुमाकर आंखों में गुस्सा लिए इस तरह निकला जैसे वह भी अनु की बातों से समर्थन रखता हूं सुनीता आवाक सी रह गई ऐसा तो पहले न था, क्या जरूरत है मुझे अनु को भला बुरा कहने की पहले तो सब कुछ ठीक था, सब प्रेम से तो रहते थे, मुझसे सारी बात भी करते थे पर अब क्या हो रहा सब मुझसे दूर होते चले जा रहे , पर क्या करें मां का हृदय हैं बड़े होते बच्चों के प्रति सशंकित ही रहता है। बच्चों को बाहर के तौर तरीको को तो जानना होगा। इन सब बातों को लगभग 2 सप्ताह बीत चुके थे, अनु ने कहीं आना-जाना भी बंद कर दिया था वह अपने कमरे में ही भाई के साथ रहती अचानक एक दिन दरवाजे की घंटी बजते ही अमन के दरवाजा खोलने पर अरे! सरला आंटी प्रणाम आईये। सरला के आने पर सभी एक साथ उसके पास बैठते हैं सरला बताती है निवेदिता (उसकी बेटी) का जन्मदिन है उसमें सभी को आना है सुनीता बेटी अनु और अमन बेटे के साथ पहुंचती हैं सभी खुश हैं पर सुनीता कहीं ना कहीं अपनी बेटी और अपने रिश्तों को लेकर उधेड़बुन में लगी है। मन में चल रहे हो द्वंद्व को सरला पहचान लेती है उसके बार-बार पूछने पर सुनीता सारी बातें बताती है तब सरला कहती है, कि मेरी बेटी भी हैं पर मैंने कभी उससे बात बात पर टोका नहीं बल्कि उसकी बातों को समझा एक दोस्त बन के जिससे वह कभी भी अपनी बातों को लेकर दूर ना हो सके बल्कि उन बातों को हम से घरवालों से साझा कर सकें।उसकी बातो से सुनीता को जैसे एक संतोष हुआ और सुनीता ने जा करके अनु को अपने गले से लगा लिया उसकी धड़कन जैसे बार-बार यह कह रही थी कि तू गलत ना थी लाडो हमें ही अपने रूढ़िवादी सोच का त्याग करके नई पीढ़ी के विचारों का स्वागत एवं सहयोग करना होगा तभी दो पीढ़ियों में सामंजस्य बना रहेगा।

●

राखी बिष्ट
पीतमपुरा दिल्ली



परिवर्तन

सर्दियों के दिन थे। मानसी रोज़ की तरह स्कूल से आई और माँ ने आवाज़ देते हुए खाना टेबल पर लगा दिया और बोली आज जल्दी बर्तन धो देना मुझे कीर्तन में जाना है । मानसी खाना खाते-खाते ही बोली कि माँ मुझे आज बहुत होमवर्क मिला है, आज तुम बर्तन साफ कर दो। माँ को देर हो रही थी लिहाज़ा बर्तन मानसी को ही धोने पड़े। वह बहुत परेशान हुई और सोचने लगी कि भाई भी तो हैं ना ?वो क्यों नही बर्तन धोते ? या उसकी तरह घर का काम क्यों नही करते? भाई रोज़ उसे चिढ़ाते हम तो लड़के हैं झाड़ू पोछा तू ही लगाएगी । रोटी भी तू ही बनाएगी। पिताजी घर में कामवाली को रखना पसंद नही करते थे इसलिए मानसी घर के सभी कामों में माँ की पूरी मदद करती थी। लड़के और लड़की के बीच इस भेद को वो समझ नही पाती थी और हमेशा यही सोचती थी कि आखिर लड़कियाँ ही सारे काम क्यों करती हैं?

ऐसे ही अपनी मेहनत से पढ़ते हुए और घर के सारे काम करते हुए वह टीचर बन गयी। अब पिताजी बहुत खुश थे पर घर के कामों की स्थिति वैसी ही रही। मानसी माँ को रोज़ कहती माँ देखना मैं शादी के बाद कोई काम नही करूँगी। मानसी की शादी हुई और मानसी ने सबसे पहले घर के काम में मदद करने वाली एक कामवाली को रख लिया। वह बहुत खुश थी।

दो तीन महीने बाद ही मानसी के भाई की शादी हुई तो उसने बहुत प्यार से माँ को समझाया, कि अब तुम कोई कामवाली रख लो क्योंकि भाभी कामकाजी महिला है।आख़िर कब घर आएगी और कब घर के काम करेगी।बस एक दिन इसी वजह से भाभी ने माँ को कहा कि देखिये मैं भी आपके बेटे की तरह नौकरी करती हूँ और शाम तक बहुत थक जाती हूँ। अब वो समय नही कि मैं ऑफिस से आऊँ और घर के सारे काम करूँ इसलिए साफ साफ कह देती हूँ कि ना मैं खाना बना सकती हूँ और ना ही ये झाड़ू, पोछा ,बर्तन कर सकती हूँ। बस फिर क्या था पिताजी सोच में पड़ गए और गुस्से में बोले कि अब हम इस बुढ़ापे में कामवाली के हाथ से खाना खाएँगे क्या? हमने भी नौकरी की, घर के काम भी किए, पर आजकल के बच्चे तो अपने घर का काम करने में भी थक जाते हैं या सकुचाते हैं। दो चार दिन उन्होंने गुस्से में ही गुज़ार दिए।

माँ ने मुझे घर पर बुलवाया और कहा कि अपने पिताजी को ज़रा समझा दे कि बच्चों की बात मानने में ही हमारी भलाई है वरना बुढ़ापे में धक्के खाने पड़ेंगे। मैंने दोनों को समझाया कि आप दोनों या तो घर के काम करो या फिर भाभी को कामवाली लगाने दो।पिताजी ने भरे हुए मन से ये बात मान ली और चुपचाप जैसा खाना मिलता खाते और समझ गए कि अब समय बदल गया है और उनको भी बदलने की जरूरत है और इसी में सब की भलाई है। यही हृदयपरिवर्तन था जिसके कारण फिर से रिश्तों में मिठास आई और अब पिताजी भी घर के काम में माँ का हाथ बँटाने लगे। ●



प्रवीण राणा वर्मा

माँ का हृदय परिवर्तन

"कभी -कभी बदलाव लाने के लिए बहुत कुछ करना और सहना पड़ता है। " सीमा ने अपनी सहेली रमा से कहा । "पर हम करेंगी क्या? " रमा ने सीमा को सवाल भरी नजरों से देखते हुए कहा।

"कुछ न कुछ तो करना पड़ेगा वरना ये लफंगे हमें यूँ ही छेड़ते रहेंगे। अभी चल और घर में आज की इस घटना के बारे में किसी को मत बताना। " सीमा ने रमा को हिदायत देते हुए कहा।

कई दिनों से या यूँ कह लीजिए जब से ये दोनों लड़कियाँ गाँव मैट्रिक तक की पढ़ाई पूरी करने के बाद शहर के स्कूल जाने लगीं थीं तब से कुछ बदमाश उनका रोज शाम को पीछा करते और गंदी -गंदी हरकतें करते। दोनों ने बदनामी और पढ़ाई बंद न हो जाए इस कारण घर पर किसी को कुछ नहीं बताया परन्तु आज उन बदमाशों ने रमा का दुपट्टा छीन लिया और उसके बस्ते से सारी किताबें निकाल कर ये कहते हुए फाड़ दी कि गाँव की नीच जाति की लड़कियों को जियादा पढ़ने की जरूरत नहीं और अगर कल से वो स्कूल गई तो उसके साथ कुछ ऐसा होगा जो वो सोच भी नहीं सकती। रमा इस घटना से बहुत डर गई पर सीमा ने हिम्मत नहीं हारी। दोनों घर पहुँची और अपना -अपना काम करके गाँव के पीपल के नीचे बैठ गईं और आने वाले कल की योजना बनाने लगीं। काफी सोच -विचार करके एक हल निकला। फिर दोनों अपने - अपने घर चलीं गई। दूसरे दिन जब वो स्कूल से वापिस आ रहीं थी तो उन्हीं बदमाश लड़कों से सामना हो गया और जैसे ही दो लड़के आगे बढ़े सीमा ने अपने हाथों में पकड़ा हुआ लाल मिर्च पाउडर उनकी तरफ फेंका अब जो एक लड़का किनारे खड़ा था रमा और सीमा ने उसे अपने बस्ते से पीटना शुरू कर दिया। अब तीनों की हालत खस्ता हो गई थी। दोनों लड़कियाँ अब वहाँ से भाग गयीं और घर पहुँच कर ही दोनों ने साँस ली। आज डरी -सहमी रमा बहुत खुश थी और अपने अंदर एक विश्वास महसूस कर रही थी। अब जब दूसरे दिन दोनों स्कूल से वापिस आई तो वो लफंगे फिर मिले और आज उनकी आँखों में बदले की भावना थी। उन में से एक ने कहा, " ये नीच जात वालियाँ हमें मारेंगी !आज हम बताते हैं इन्हें हम से उलझने का परिणाम। " इतना कह कर जैसे ही उन्होंने सीमा को बालों से खींच कर नीचे गिराया तो रमा ने बिना डरे उस लड़के के सिर पर पत्थर दे मारा और इसी समय सामने दो पुलिस वाले और उनकी कक्षा अध्यापिका थी। जिसने रमा और सीमा में ये परिवर्तन लाया था कि दोनों ने बिना डरे उन बदमाशों का सामना किया ।

दीपक कुमार पंकज

मुजफ्फरपुर, बिहार

मोबाइल: 8084491137



परिवर्तन

बात 2015 की है, मैं और मेरे कुछ दोस्त पश्चिम बंगाल बीएसएफ मेडिकल टेस्ट के लिए गये थे। ट्रेन से 12 घंटे का सफर तय करके हम लोग नौकाघाट नाम के एक जगह पर पहुंचे, रास्तें में देर रात हो चुकी थी हम लोगों को भूख लगने लगी थी, लेकिन होटल वाले की बंगाली भाषा हम लोगों की समझ में नहीं आ रही थी। फिर जैसे -तैसे हम लोगों ने खाना खाया और होटल बुक करके रूम में आए। एक घंटा बाद हम लोग का मेडिकल टेस्ट होना था । अब समय नजदीक आ गया सभी का बारी-बारी से टेस्ट शुरू हुआ, सभी असफल हो गए। अब मेरी बारी आई बीएसएफ का डॉक्टर बोला तुम्हारे हार्ट में कुछ प्रॉब्लम है, तुम इसे ठीक करा लो तो तुम्हें आगे मौका मिल सकता है। सभी यह जानकर जलने लगे कि मुझे फिर से मौका मिल सकता है, और उस समय होटल में मुझे छोड़कर भाग गए फिर मैं अकेला हो गया । अगली सुबह 3:00 बजे की ट्रेन से घर आने लगा तो वे लोग मुझे ट्रेन में मिले मेरे पास पैसे नहीं थे ....मैं भूखा था वह लोग चाय बिस्कुट लेकर खुद खा पी रहे थे.. यह देखकर पास में बैठी एक लड़की अपने पर्स से मुझे 100रु. निकाल कर दिये और बोली कि तुम कुछ खा पी लो, मैं अवाक् रह गया मुझे वह लड़की भगवान की तरह दिखी ...मुझे लगा कि सच में मानवता जिंदा है इस संसार में, उन दोस्तों से हमेशा के लिए मुझे नफरत सी हो गई। .. मैं यह सोचने पर विवश हो गया कि कैसा यह बंधन है ...कैसा यह सफर है ...कैसी मुलाकात है जो अनजान को एक सहारा दे रही है।...दोस्तों की वजह से जो भरोसा उठ गया था... उस अंजान लड़की की वजह से फिर बरकरार हुआ, मेरा मन परिवर्तन हो गया।



श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

व्याख्याता-हिन्दी

अशोक उ०मा०विद्यालय, लहार,भिण्ड(म०प्र०)

मो०-9993282741 Komalsir17@gmail.com

परिवर्तन

लाला अमर चंद महाजन के दिवंगत हो जाने के बाद उनके व्यापार का सारा भार उनके बेटे विमल चंद के कंधों पर आ गया था। लाला अमर चंद का व्यापार बहुत फैला हुआ था। वे शहर के बड़े व्यापारी थे। इतने बड़े व्यापार को सम्हालने बाला था केवल उनका बेटा विमल चंद। वैसे उनकी एक बेटी भी थी, सुनयना। किन्तु उसकी शादी हो चुकी थी। विमल चंद ने उसे व्यापार और प्रापर्टी से दूर ही रखा। विमल चंद के मन में लालच आ गया। उसने अपने मन में सोच लिया था कि वह सुनयना को इस प्रापर्टी से कुछ भी नहीं देगा। हाँ! यदि वह वैधानिक रूप से कुछ कार्यवाही करेगी तब देखा जायेगा।

धीरे-धीरे समय निकलने लगा। सुनयना अपने भाई -भाभी का हाल-चाल लेती रही। समय -समय पर आती-जाती रही। किन्तु विमल चंद ने कोई उत्साह नहीं दिखाया। सुनयना के पति को व्यापार में घाटा पर घाटा आता गया। और एक दिन उनका सारा काम धंधा ठप्प हो गया। सुनयना बहुत परेशान रहने लगी। सुनयना की ऐसी हालत देखकर एक दिन विमल चंद की पत्नी ने कहा , " सुनो जी! इस समय सुनयना की हालत ठीक नहीं है। वह रुपये पैसों के लिये बहुत परेशान है। उससे इस समय कम ही सम्बंध रखो नहीं तो हमीं से कुछ माँगने लगी तो।" "बात तो तुम ठीक कहती हो सुनंदा। हमें उससे इस समय कम ही मतलब रखना है। बुराई भी न हो और हम मुसीबत से भी बचेंगे।" विमल चंद ने विषैली मुस्कान लेते हुये सुनंदा की बात का समर्थन किया।

जब सुनयना बहुत परेशान हो गई तो एक दिन वह अपने पति से कहने लगी , "क्यों जी? ऐसे कब तक चलेगा। अब तो मुझसे बच्चों की यह हालत देखी नहीं जाती। उनके खेलने खाने के दिन हैं और हम उन्हें भर पेट खाना भी बड़ी मुश्किल से दे पाते हैं।" "तुम ठीक कहती हो सुनयना मुझे भी यह अच्छा नहीं लगता। क्या करूँ पूरा प्रयास कर रहा हूँ, किन्तु व्यापार में कोई सफलता ही नहीं मिल रही। कहो तो मैं अपने रिस्तदारों से कुछ मदद मांगूँ।"

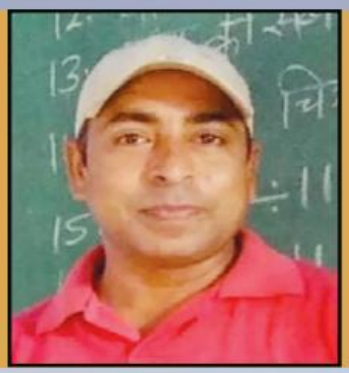
" नहीं जी! हमें अपने हिस्से का संघर्ष स्वयं ही करना चाहिये। ऐसे में कोई रिस्तेदार सहयोग नहीं करता और उपहास ही करते हैं।" "अब तो मेरा मन करता है कि यह जगह ही छोड़ दूँ। कहीं बड़े शहर में हमें हाथ पाँव मारने चाहिये।" "जैसा आप उचित समझें " सुनयना बच्ची को गोद में उठाते हुये बोली।

समय बीतता गया। स्थितियाँ - परिस्थितियाँ बनती बिगड़ती रहीं। इधर बहुत दिनों के बाद एक दिन विमल चंद ने अपनी पत्नि सुगंधा से कहा, सुगंधा बहुत दिनों से सुनयना का कोई हाल चाल नहीं मिला। मुझे तो पता चला है कि वे लोग शहर छोड़ कर कहीं और चले गये हैं।" उदास होते हुये विमल चंद ने कहा।

विमल चंद ने अपना व्यापार बहुत बढ़ा लिया था। सारा रुपया पैसा,जेबर, प्रापर्टी सब व्यापार में लगा दी। अब विमल चंद शहर के बड़े व्यापारियों में गिने जाते थे।

समय पता नहीं कब किसका क्या हाल कर दे कुछ नही कहा जा सकता। एक दिन माल से भरी गोदाम में बिजली के तारों से आग लग गई। सारा माल जल कर राख हो गया। करोड़ों का विमल चंद खाक में मिल गया। यह बात सच है जब समय खराब आता है तो अपने घनिष्ठ भी साथ छोड़ जाते हैं। इसे विमल चंद से अधिक कौन जान सकता है। विमल चंद ने अपनी बेटी की शादी सहारनपुर के जिस बड़े किराना व्यवसायी के लड़के से तय की थी वह अपनी बात से मुकर गया। उसने रिस्ता तोड़ दिया। सब कुछ उलट पलट गया। फिर एक दिन अचानक टेकचंद का फोन आया कि वे शादी के लिये तैयार हैं। शादी के खर्चे की सारी व्यवस्था हो गई है। आप बस अच्छा सा मुहूर्त देखकर लड़की के साथ सहारन पुर आ जाइये। विमल चंद हैरान,,,?? यह पासा कैसे पलट गया? खैर....।

शादी बड़ी धूम-धाम से हो रही थी। सारी व्यवस्था उन्हीं की थी। जब जयमाला और फेरों के बाद बिदाई की बेला आई तो दुल्हन के रूप मे अपनी बेटी को सुनयना के साथ आते हुये देख कर विमल चंद कुछ सकपका गया। वह कुछ समझ नहीं पा रहा था। अचानक सुनयना को सामने देख कर वह सुनयना से लिपट गया। सुनयना भी भाई के गले से लिपट कर रोने लगी। तभी टेकचंद ने आकर बताया, "भाई यह शादी सुनयना जी के कहने पर ही हो रही है। सारी व्यवस्था इन्हीं की ही है। यह गैस्ट हाउस सुनयना जी का ही है। विमल चंद और सुनंदा अपराधी की भांति उसके पैरों पर गिर कर रोने लगे। सुनयना ने दोनों को उठा कर कहा, " भैया -भाभी उठिये समय कभी किसी का एक सा नहीं रहता, किन्तु हमारा रिस्ते का बंधन तो अटूट है। हमारा रिस्ता खून का रिस्ता है। हमें इस "अटूट बंधन" से कोई अलग नहीं कर सकता, समय भी। समय तो बनता बिगड़ता रहता है। क्योंकि परिवर्तन ही संसार का नियम है।" कह कर सुनयना भैया -भाभी के आंसू पोछने लगे।



पी.के. सैनी
जिला अलवर , राजस्थान

परिवर्तन

महज 12 साल का ये छोटा सा बच्चा जिसके हाथों से औजार नही पकड़े जा रहे थे फिर भी मेरी कार को ठीक कर रहा था।

मैंने पूछा छोटू कौनसी कक्षा में पढ़ता है?

किसी में भी नहीं अंकल, मम्मी घर पर ही पढ़ाती हैं। स्कूल क्यों नही जाता?

मम्मी कहती हैं अगली साल तेरा दाखिला करवा दूंगी तब तक फीस के लिये पैसे जमा कर लें। मैं जल्दी में था तो निकल लिया, लेकिन कुछ प्रश्न मेरे जहन में आ रहे थे। सोचा अगली बार आऊंगा तो पुछूंगा। 10 दिन बाद मै फिर उसी वर्कशॉप पर गया, मैंने वर्कशॉप मालिक से पूछा वो छोटू कहां है ? आज नही आया साहब-उसने बताया। मैं मायूस था लेकिन दोबारा मिलने की चाह में फिर चल दिया।

10 दिन बाद मैं फिर उसी वर्कशॉप पर गया- अरे छोटू तू उस दिन क्यों नही आया ? मैंने पूछा। अंकल मम्मी की तबीयत ठीक नही थी मुझे ही घर का काम करना पड़ा, अरे वाह तू घर का भी काम जानता है-हाँ सारा करता हूं। जब मम्मी बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती हैं तब भी।

पापा कहां है आपके? दूसरे शहर में रहते हैं हमारे पास नहीं रहते - छोटू बोला।

अच्छा मैं तेरा एडमिशन करवा दूंगा पूछ लेना तेरी मम्मी से। कल आऊंगा मैं। अब कुछ तो था जो अंदर से मुझे झंजोड रहा था। दूसरे दिन उसने मुझे बोला अंकल मम्मी ने हां कर दिया है बोला है की हम उन अंकल के पैसे चुका देंगे। कोई जरूरत नहीं मैं बोला-हम स्कूल की तरफ चले स्कूल में जब मैं उसका एडमिशन फॉर्म भर रहा था तो जैसे ही उसने बताया मेरा नाम-देव है पापा का नाम-राजेश है। मेरे हाथ से कलम थम गई, मैं स्तब्ध सा रहा गया! मैं उसको टकटकी लगाकर देखता रहा, ये तो मेरा देव है मैं इसका पिता हूँ। मेरी आँखों से आंसू निकलने लगे लेकिन तभी मैंने अपने आप को संभाला, उसको पता नही चलने दिया कि मैं उसका पिता हूँ। एडमिशन के बाद उसको बुक्स दिलाकर उसको वर्कशॉप पर ही छोड़ दिया। उसके जाने के बाद मैं सोचता रहा, जिस छोटू से मैं कार सही करवाता था वो मेरा बेटा है। करुणा के आंसुओं की धारा मेरी आँखों से बह रही थी।

अब हर सप्ताह मैं उंसकी प्रोग्रेस की जानकारी लेता। अब साल खत्म होने को था परीक्षाओ के परिणाम आये देव कक्षा में अब्बल नम्बर पर था। मैं बहुत खुश था। देव ने बताया कि उसका 2 दिन बाद स्कूल में बार्षिक उत्सव है उसमें मम्मी पापा को जाना जरूरी है। देव बोला-अंकल मेरे पापा तो दूर शहर में रहते हैं उनसे बात नहीं होती, मेरे पास उनका कोई फोन नंबर भी नहीँ है ,मैंने मम्मी को बोला पापा को बुला लो मम्मी बोलीं पापा हमारे पास नही आते बोला ना आपको। क्या आप आ सकते हो बार्षिक उत्सव में, मैंने हामी भर ली।

बार्षिक उत्सव का दिन मेरी नजरें देव को तलाश रहीं थीं। वो अपनी मम्मी के साथ आगे की सीट पर बैठा था वहाँ एक सीट खाली पडी थी मैं उसके नजदीक कौसे जाऊँ? एक पिता की करुणा उंसकी तरफ धकेल रही थी लेकिन डर भी था कहीं सविता (मेरी पत्नी) क्या कहेंगी। तभी आवाज सुनाई दी- अंकल यहाँ आ जाओ मैं अनजान बनकर उनकी तरफ चला, अब सविता मुझे और मैं सविता को लगातार देखते जा रहे थे, मानो स्वर्ग जमीन पर उतर आया हो इतने बर्षो की दूर हुए आज मिले, दोनों के आंखों में पश्चाताप की के आंसू थे। अंकल ये मेरी मम्मी हैं। मम्मी ये अंकल ,और तभी देव का नाम स्टेज पर पुकार गया हम तीनों एक साथ थे।

सविता सिर्फ इतना बोलीं , काश ये परिवर्तन पहले होता तो 10 साल अलग-अलग रहकर नही बिताने पड़ते।



ललित भट्ट
हल्द्वानी , उत्तराखंड

भारतीय सेना की चाह

मैं उत्तराखंड के चंपावत जिले का निवासी हूं, और यह बात उस समय की है जब मैं 11वीं कक्षा में अध्ययनरत था।

हमारे क्षेत्र के हर बच्चे का एक सबसे बड़ा सपना होता है कि वह किसी तरह से भारतीय सेना में भर्ती हो जाए, यह नहीं कि इसके लिए वे कोई मेहनत नहीं करते,इन्ही सभी में से मैं भी एक था।

वह समय मुझे आज भी अच्छे से याद है, सुबह होते ही झुरमुट से प्रकाश में ही सभी गांव के लड़के अपने मन में सेना में भर्ती होने की ख्वाहिश को लिए गांव की एक पहाड़ी में कड़ी मेहनत करते, पहाड़ी की चोटी में एक 200-300 मीटर की पगडंडी बनाकर दौड़ते, अब तो वह पगडंडी मानो हमेशा के लिए एक रनिंग ट्रैक बन गई हो। गांव में सुविधाओं का अभाव होते हुए भी कभी अपने आप को असहाय नहीं समझते, बस जीवन का एक ही लक्ष्य था। अबकी बार जो भी सेना की भर्ती आए उसमें किसी भी तरह से जी जान लगाकर शारीरिक परीक्षा को उत्तीर्ण करना और भर्ती होना।

इस संघर्ष मय जीवन में अब वह समय पास था, जब सेना में भर्ती होने की इच्छा साकार हो सके। जिला पिथौरागढ़ के बीआरओ में सेना की भर्ती में सम्मिलित होने के लिए हमें पिथौरागढ़ की बस पकड़नी थी। जिसके लिए क्षेत्र की सबसे बड़ी बाजार लोहाघाट तब जाना होता है। आज तो हमारे गांव में यातायात के बहुत साधन हैं, परंतु उस समय केवल एक गाड़ी हुआ करती थी जो गांव की कच्ची सड़क पर बाजार तक जाने का एक सहारा बन चुकी थी। हालांकि गांव के लोग पैदल चलना अभी भूले नहीं, किंतु गांव में नई-नई सड़क ऊपर से गांव के लोगों का गाड़ी से कहीं भी जाने का शौक, एक ही गाड़ी में 25 से 30 लोग हर तरफ से लटक कर छत में चढ़कर बाजार तक जाते थे।

अब हम लोग गाड़ी की छत में बैठकर बड़ी आशा के साथ सेना भर्ती के लिए निकल चुके थे, कुछ दूर जाने के बाद ही एकाएक ड्राइवर ने गाड़ी को रोका और कहा- गाड़ी में आज लोड बहुत ज्यादा हो चुका है और कुछ तकनीकी खराबी बताकर कहा कि इतने लोगों को नहीं लेजा पाएंगे। तो उन्होंने हम लड़कों को पैदल ही आने की सलाह दी। सभी लड़के परेशान थे कि किस तरह अब पिथौरागढ़ पहुंचे, अभी गांव से जोड़ने वाली लिंक रोड 6 किलोमीटर दूर थी ।जहां तक पैदल जाये बिना किसी

भी वाहन का मिलना नामुमकिन था। किसी तरह लोहाघाट पहुंचते हैं, अब वहां पूरे जिले के कई लड़के बस के इंतजार में पहले से खड़े थे। कुछ तो निराश होने लगे परंतु कुछ पैदल ही 65 किलोमीटर याला करके भर्ती में सम्मिलित होने को तैयार थे। वह अपनी मेहनत को जाया नहीं जाने देते थे। किसी तरह से बसों की व्यवस्था हुई सभी लड़कौं को पिथौरागढ़ पहुंचाया गया।

जहां तक हमारे जीवन में परिवर्तन के लिए अब भी कई समस्याऐं थी। भोजन की, रात में रुकने की, जिससे कि दिन भर की थकान को मिटाकर दूसरे दिन सुबह सेना की भर्ती में दौड़ लगा सकें। परंतु यह सभी के लिए संभव नहीं था, बहुत लड़के गरीब परिवारों से थे जो होटलों के किराए देने में सक्षम नहीं थे, ऊपर से दिसंबर का महीना, ठीठुराती सर्दी। किसी तरह से रात का भोजन किया और पैदल ही भार्ती क्षेत्र की तरफ पैदल ही चल पड़े, जो पिथौरागढ़ बाजार से 3 से 4 किलोमीटर दूरी पर था। पहुंचते-पहुंचते रात के 12:00 बजने वाले थे। ठिठुराती सर्दी में कुछ समय बैठने के बाद रात के 1:30 बजे से भर्ती क्षेत्र में प्रवेश प्रारंभ हो गया। रात भर सारे प्रमाण पत्रों की जांच के बाद सुबह वह परीक्षा की घड़ी सामने थी, जिसके लिए इतना कठिन परिश्रम किया था परंतु उस समय तक ठंड से शरीर इस तरह ठिठुर(जय) चुका था, कि भागदौड़ करना तो दूर हाथ की उंगलियों तक सीधी नहीं हो पा रही थी। परंतु मन में बस एक ही बात चल रही थी किसी तरह इस परीक्षा में पास हो जाएं और जीवन में कुछ अच्छा सा परिवर्तन आए। पर कौन जाने किसके भाग्य में क्या लिखा है, बस हमें तो अपना कर्म करना था। तीन-चार सौ लड़कों को एक साथ दौड़ाया जाता और मुश्किल से 10 लड़के ही पास हो पाते थे। पास होने वालौं के दिन भर कई शारीरिक परीक्षण होते और जो सारी परीक्षा पास करता वह अपने जीवन को परिवर्तित करने की राह में एक कदम बढ़ा देता।

जो सारी परीक्षाएं पास कर देता सच में उसका जीवन परिवर्तन हो जाता और जो नहीं पास कर पाता वह अगली भर्ती की तैयारी में जुट जाता। यही उत्तराखंड के हर लड़के की इच्छा होती, और वह अपनी भर्ती होने की अंतिम समय सीमा तक भर्ती होकर जीवन परिवर्तन करने का प्रयत्न करते हैं। अब जीवन में तो परिवर्तन होता ही है, चाहे फिर सेना में भर्ती हो या ना हो, जो भर्ती नहीं हो पाता उसके पास अब किसी भी प्रकार के रोजगार से जुड़ने के अलावा दूसरा विकल्प नहीं होता वास्तव में अब यह उसकी विवशता हो जाती है। कि वह अपनी चढ़ती उम्र के साथ अपने परिवार को संभालने के लिए कुछ कमाए।



प्रकाश कुमार खोवाल

(अध्यापक)

जिला सीकर (राजस्थान)

परिवर्तन

21 मई 2020 को जब प्रकाश काम से घर लौटा तो उसकी पत्नी अनिता पूजा की तैयारी कर रही थी। आज उनका वट सावित्री व्रत था इसलिए उपवास रखा था। प्रकाश ने अनिता से चाय मांगी तो, उसने लाने में थोड़ी देर कर दी। जिससे प्रकाश को गुस्सा आया और चिलाने लगा। तभी उनकी बेटी बृजेश छत से नीचे आई र पापा का गुस्सा देखकर रसोई से चाय- नाश्ता लाकर पापा को दी। प्रकाश ने कहा अरे बेटा तुम क्यों लाई हो यह तो तुम्हारी मां का काम है। तब बृजेश ने कहा पापा घर तो हम सबका है । फिर काम सिर्फ मां ही क्यों करें, वह सुबह से भूखी है। आज उनका उपवास भी था वह भी थक जाती है। लेकिन प्रकाश ने इस और कोई ध्यान नहीं दिया और उठ कर अपने दोस्त के घर चला गया।

जब रात को प्रकाश घर लौटा तो खाना टेबल पर लगा हुआ था। उसकी पत्नी और बेटी उनका ही इंतजार कर रही थी। तब बेटी ने कहा पापा आज मैंने अपनी मर्जी से खाना बनाया है। चख कर बताओ कैसा है।

प्रकाश खाना चखते ही बोला, शाबाश! मेरी बेटी खाना बहुत ही अच्छा बनाया है।

बोलो आपको इसके लिए क्या तोहफा दिया जाए।

तब बृजेश बोली बस पापा मेरी शादी उससे कीजिएगा जो मेरे भूखे रहने पर खुद भी भूखा रह सके।

बेटी की बात सुनकर प्रकाश को अपनी पत्नी अनिता के प्रति गलत व्यवहार का अहसास हुआ। उसने अपनी पत्नी से माफी मांगी और कहा आज हमारी बेटी ने मेरी आंखे खोल दी। आज से मैं भी आपके साथ व्रत रखूंगा और आपके हर सुख दुःख में साथ दूंगा बिना गुस्सा किए।

कैलाश गर्ग रातड़ी

शिक्षक

उपखण्ड- शिव

जिला-बाड़मेर (राजस्थान)



परिवर्तन

वर्षा परिवार की लाड़ली बिटिया थी । लाड़-प्यार के चलते वह जिद्दी स्वभाव की थी तथा कोई भी काम अपने हाथ से नहीं करती थी । परिवारवाले उसे खूब समझाते पर चिकने घड़े पर पानी की भाँति उस पर कोई प्रभाव नही पड़ता । वर्षा अब इतनी बड़ी हो गई थी कि उसके रिश्तें की बात करने वाले आने लग गए । लेकिन वर्षा अभी तक न तो खाना बनाना जानती थी और न ही चाय । यहाँ तक कि वर्षा के कपड़े धोने का काम , घर की साफ-सफाई, खाना बनाने, पशुओं की देखभाल इत्यादि कार्य उसकी मम्मी ही करती थी । एक दिन वर्षा ननिहाल नाईट सिटी जातीगई । वहाँ एक दिन अपनी वयोवृद्ध नानी को झाड़ू लगाते, कपड़ा धोते एवं बर्तन साफ करते हुए देखा तो वो नानी से बोली । नानी! आपके इतना भरा-पूरा परिवार हैं । घर में बहुएँ , बेटियां, पोतियां सब है फिर ये सब काम आप क्यों कर रही हो ? तब नानी बोली, वर्षा बेटा ! जितना हो सके उतना काम अपने हाथ से कर लेना चाहिए। इससे आलस भी नही आता और शरीर भी ऊर्जावान रहता हैं । नानी बोली मैं अभी तक मेरे बर्तन स्वयं साफ करती हूँ, मेरे कपड़े स्वयं धोती हूँ, मेरे कमरे की सफाई स्वयं करती हूँ । यह सब सुनकर वर्षा का दिल पिघल गया। वर्षा ने सोचा मेरी नानी इस अवस्था में भी यह सब कर सकती है तो मैं क्यों नहीं ? कुछ दिनों के बाद वह अपने गाँव लौटी। घर पर साफ-सफाई, बर्तन धोने, कपड़े धोने, खाना बनाने इत्यादि कार्यो में मम्मी के साथ हाथ बंटाने लगी । वर्षा के इस बदले हुए रूप को देखकर घरवाले सभी खुश थे ।



जीवन किन्डो

बन्दापनी , पश्चिम बंगाल

जिन्दगी परिवर्तन

एक गाँव में आरती नाम की एक गरीब औरत रहती थी । उसकी एक छोटी सी पाँच साल की बेटी थी अंजली । परिवार कहने को सिर्फ दो जन थे ।आरती का पति नरेन शादी के दो साल बाद गाँव से बाहर काम करने दूर शहर गये और उधर ही खो गये । आरती का जिन्दगी कष्ट से गुजर रही थी । दो वक्त का खाना बहुत मुश्किल से जुटा पाते थे । उस गाँव में सुलेखा नाम की एक दीदीमुनी थी । जो गाँव के विद्यालय में बच्चों को पढ़ाती थी । दीदीमुनी को उसकी गरीबी और लाचारी देखा न गया। उसने उस गरीब औरत आरती को बुलाया और बोली - 'मैं तुम्हारे लिए काम की व्यवस्था कर दूँगी,तुम्हें वेतन मिलेगा, काम करोगी ?'

आरती ने कहा- 'जी दीदीमुनी करूंगी।' दूसरे दिन से आरती को गाँव के विद्यालय में बच्चों के लिए खाना पकाने का काम मिल गया । इससे उसकी जिन्दगी में सुधार आया। वह अपने बेटी की पालन-पोषण अच्छी तरह कर पायी ।अंजली किसी तरह पढ़ - लिखकर गाँव के विद्यालय में प्रधानाध्यापिका बन गई । प्रधानाध्यापिका बनने के बाद अंजली ने गाँव के गरीब परिवार और असहाय , लाचार लोगों के जीवन को परिवर्तन कर बेहतर जिन्दगी देने का निश्चय कर लिया । नयी दीदीमुनी अंजली ने गांव के लोगों के लिए कपड़े सिलाई - बुनाई करने और सीखने की व्यवस्था कर दी ।इससे गांव के लोगों को रोजगार मिल गया । इसके अलावा सरकार से मिलने वाले विभिन्न प्रकार के रोजगार के माध्यम और मदद को गाँव के लोगों को दिलवाया । इस तरह वह एक अच्छा परिवर्तन लाने में सफल रही ।

कुमार संदीप
मुजफ्फरपुर, बिहार



हिम्मत

नवीन महामारी से चहुंओर मची हाहाकार देख-सुनकर एक कोने में बैठ चिंतन मनन करने लगा। उस वक्त उसकी आँखें नम थी। हर ओर उसे अंधकार ही अंधकार नज़र आ रहा था। मजदूरों के जीवन में आए इस वक्त बेइंतहा दर्द को देख उसका हृदर सिहर उठा था। नवीन कवि था। पेड़ के कट जाने के बाद जिस शख़्स ने पेड़ के दर्द को महसूस कर अनगिनत कविताएं लिखी हो, उसके मन की व्यथा मजदूरों के पाँव में आए छाले को देख भलीभांति समझी जा सकती थी। मायूसी के आंसू साफ-साफ दिख रहे थे नवीन की आँखों में। तभी उसकी माँ उसके निकट आती है और कहती है " बेटे तू तो अपनी रचनाओं के माध्यम से सभी को प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ने के लिए साहस बढ़ाते रहते हो, और आज ख़ुद मायूस हो। बेटे ऐसा नहीं करते। तुम ख़ुद को नहीं संभाल पाओगे तो अपनी कलम से सभी का हौसला कैसे बढ़ाओगे।

बेटे वक्त में परिवर्तन ज़रूर होता है, आज न सही कल ही सही!" माँ की इन बातों को सुन उसे एक नई ऊर्जा मिली। उसकी मायूसी मिट चुकी थी अब। उसने आगे से हिम्मत न हारने का प्रण लिया॥

●



"परिवर्तन" लघुकथा ई–पुस्तिका जो एक साझा प्रयास है, नये लेखकों के मनोबल को बढ़ाने और हिन्दी साहित्य के प्रोत्साहन को ध्यान में रखकर प्रकाशित किया जा रहा है। यह ई–पुस्तिका "साहित्य उत्थान कोश" का दूसरा प्रयास है। पहले प्रयास में हमने काव्य का ई–पुस्तिका प्रकाशित किया था। हमारा मुख्य उद्देश्य हमारे समूह में साहित्य को बढ़ावा देना है। जो नये लेखक हैं, लिखना चाहते हैं उनको बढ़ावा देना है। यह हमारे फेसबुक ग्रुप के टॉपिक से पीडीएफ फार्मेट में डाउनलोड कर एडोब पीडीएफ रीडर के माध्यम से आसानी से पढ़ा जा सकेगा या मोबाइल में एडोब पीडीएफ रीडर एप डाउनलोड कर इस पीडीएफ को पढ़ सकते हैं। इसके अलावा आपको एक लिंक मिलेगा जिससे आप अपने कंप्यूटर या लैपटॉप या मोबाइल पर भी ऑनलाइन पढ़ सकते हैं।

इस ई–पुस्तिका के सहेजने में पायल जैन जी, यशवंत राय कुलश्रेष्ठ जी, अंजना अग्रवाल जी, वसुंधरा परमार जी, ज्योति मिश्रा जी, आशुतोष तिवारी जी, रश्मि पाण्डेय जी का विशेष सहयोग है। हम उन सभी लोगों को धन्यवाद देते हैं और अभार व्यक्त करते हैं जिनका सहयोग इस पुस्तिका के सृजन में रहा है। चाहे लेखक हों, संपादन टीम हो, मोडरेटर टीम हो, सबका समान सहयोग है। मैं विशेष रूप से मानता हूं कि 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता'। संगठन में शक्ति होती है, एकता में जीतने की क्षमता होती है, एक रहें, नेक रहें।

–विनय कुमार भक्त